गुरुपूर्णिमा
विशेषांक
संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
ऋषि प्रसाद
मासिक पत्रिका
मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०१६
वर्ष : २६ अंक : १
(निरंतर अंक : २८३)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)
पूज्य बापूजी के सद्गुरु भगवत्पाद
साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज
तीरथ नहाये एक फल,
संत मिले फल चार ।
सद्गुरु मिले अनंत फल...
सद्गुरु के दर्शन, सत्संग,
सान्निध्य से जो अनंत रस,
अनंत आनंद, अनंत सुख
मिलता है उसका वर्णन
करने में कौन समर्थ है ?
वहाँ वाणी रुक जाती है,
नेत्र मुँद जाते हैं और हृदय
की भावधारा का वर्णन
नहीं हो सकता ।
पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू
ऋषि प्रसाद
२५
वर्ष
रजत जयंती
वर्ष २०१५-१६

सत्र २०१५-१६ की बोर्ड परीक्षाओं में भी गुरुकुलों के उत्कृष्ट परिणाम

अहमदाबाद (गुज.) और कोटगढ़ (ओड़िशा) के गुरुकुलों के १०वीं तथा १२वीं बोर्ड का परीक्षा-परिणाम १००% रहा। इसके अलावा सूरत, आगरा, जयपुर, लुधियाना, छिंदवाड़ा, धुलिया गुरुकुलों का १०वीं बोर्ड का परीक्षा-परिणाम १००% रहा। धुलिया गुरुकुल के १०वीं के सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

१०वीं राज्य बोर्ड परीक्षा-परिणाम

(PR = Percentile Rank)

चैतन्य धनाणी, अहमदाबाद, ९९.०३ PR

गौरांग मेर, सूरत, ९९ PR

कोमल पटेल, दंतोड़, ९८.१६ PR

धवल टंडेल, सूरत, ९७ PR

अखंड ज्योति गुप्ता, अहमदाबाद, ९६.६४ PR

भावेश तिवारी, अहमदाबाद, ९६.५६ PR

मिथिल बारिया, अहमदाबाद, ९५.४८ PR

गोपाल राठौड़, अहमदाबाद, ९४.६४ PR

जैमिन घोघारी, सूरत, ९४.५४ PR

कृपा चावड़ा, राजकोट, ९४.४४ PR

कश्यप संघानी, राजकोट, ९४.२२ PR

कुश कटारमल, अहमदाबाद, ९४ PR

अजिताभ त्रिपाठी, अहमदाबाद, ९३.५५ PR

श्यामसुंदर शर्मा, अहमदाबाद, ९३.०९ PR

हेत पटेल, सूरत, ९२.६० PR

राहुल सोरठिया, राजकोट, ९१.७० PR

विशाल कटारिया, लुधियाना, ९०%

विशाल वाघ, धुलिया, ८७%

१०वीं सीबीएसई बोर्ड परीक्षा-परिणाम (CGPA १०.० में से)

आशुतोष पलवार, छिंदवाड़ा, १०.०

सोनी गुप्ता, छिंदवाड़ा, १०.०

भूषण कन्हेरकर, छिंदवाड़ा, १०.०

वैष्णवी अग्रवाल, छिंदवाड़ा, १०.०

सूरज कुमार, छिंदवाड़ा, १०.०

सागर इंदोलिआ, आगरा, १०.०

रिशव राय, आगरा, १०.०

द्रव्यवर्धन अग्रवाल, आगरा, १०.०

ध्रुव कुमार रावत, आगरा, १०.०

योगेश अंजना, इंदौर, १०.०

माही अग्रवाल, आगरा, १०.०

अमन चौधरी, आगरा, १०.०

रितेश अल्डक, छिंदवाड़ा, ९.८

साक्षी कोल्हे, छिंदवाड़ा, ९.८

आशीष वार्ष्णेय, आगरा, ९.८

हरि ॐ कौशिक, आगरा, ९.८

ललित शर्मा, आगरा, ९.८

रोहित शर्मा, आगरा, ९.८

१२वीं बोर्ड परीक्षा-परिणाम

नारायण वागले, अहमदाबाद, ९७.०५ PR

पारस चौधरी, अहमदाबाद, ९६.९१ PR

रामकृष्ण चौहान, अहमदाबाद, ८७.१९ PR

प्राज्ञ गुप्ता, छिंदवाड़ा, ८९.६%

जतिन सोनी, आगरा, ८८.४%

तरुण चौधरी, आगरा, ८६.८%

राघवेन्द्र सिंह, आगरा, ८६%

लक्की राय, छिंदवाड़ा, ८५.२%

राहुल वर्मा, रायपुर, ८५%

स्थानाभाव के कारण सभी उत्कृष्ट वरीयतावाले छात्रों के परीक्षा-परिणाम नहीं दे पा रहे हैं। उपरोक्त गुरुकुलों के सिवाय सरकी लीमड़ी, जयपुर, भोपाल, रजोकरी-दिल्ली, गोंदिया, अलीगढ़, वाराणसी, बस्ती, दमोह, गाजियाबाद, जम्मू, खिलचीपुर, बिनका आदि स्थानों पर भी गुरुकुल चलाये जा रहे हैं।

आवरण पृष्ठ ३ भी देखें।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २६ अंक : १ मूल्य : ₹ ६

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २८३)

प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०१६

पृष्ठ संख्या : ३२+४ (आवरण पृष्ठ सहित)

आषाढ़-श्रावण वि.सं. २०७३

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान

मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा

प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५

सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी

सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा

संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२

Email : ashramindia@ashram.org

Website : www.ashram.org

www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी	सिंधी व सिंधी (देवनागरी)
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०	₹ ३०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५	₹ ५५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५	₹ १२०
आजीवन	₹ ५००	----	₹ २९०

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें । इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी । अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें ।

'ऋषि प्रसाद' रजत जयंती वर्ष

(ऋषि प्रसाद जयंती : १९ जुलाई)

गुरुपूर्णिमा के पावन दिन १९ जुलाई को 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की रजत जयंती मनायी जायेगी। इस पत्रिका ने २५ वर्षों में २८३ अंकों की गौरवपूर्ण यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण की है (ऋषि प्रसाद के गुजराती संस्करण को २६ वर्ष पूर्ण हुए हैं)। पत्रिका की इस सफलता पर हम पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में वंदन एवं अपने अमूल्य मानव-जीवन की महत्ता समझनेवाले 'ऋषि प्रसाद' के सभी पाठकों का हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

विगत वर्षों में 'ऋषि प्रसाद' के माध्यम से असंख्य लोगों के जीवन में आनंद, शांति, आध्यात्मिक ज्ञान, संयम-सदाचार व भगवद्भक्ति का संचार हुआ है और मनुष्य-जन्म के वास्तविक उद्देश्य के प्रति जागृति आयी है।

बड़भागी हैं वे पुण्यात्मा जो मान-अपमान, सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास की परवाह किये बिना स्वस्थ, सुखी एवं सम्मानित जीवन का संदेश देनेवाली 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका समाज तक पहुँचाते हैं। इस दैवी कार्य में सहभागी होकर वे अपना मनुष्य-जन्म तो सफल कर ही रहे हैं, साथ ही औरों के जीवन को भी सद्गुरु, ऋषियों, शास्त्रों के ज्ञान से धर्म, उपासना, योग और वेदांत के दिव्य संस्कारों द्वारा सर्वांगसम्पूर्ण बनाते हुए पुण्यभागी, धनभागी हो रहे हैं।

जो महापुरुषों के इस पावन प्रसाद से वंचित हैं, उन तक भी यह पहुँचे इसलिए 'रजत जयंती' के इस अवसर पर हम सभी साधक, पाठक तथा देश व संस्कृति प्रेमी पुण्यात्मा 'ऋषि प्रसाद' मासिक पत्रिका और 'ऋषि दर्शन' मासिक विडियो मैगजीन को अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचाने का संकल्प करें। जो इनका लाभ ले रहे हैं वे सज्जन अपने परिचितों व अन्य लोगों तक भी इन्हें पहुँचाकर उन्हें भी लाभान्वित करने का आत्मसंतोष पायें।

– सम्पादक, ऋषि प्रसाद

ऋषि प्रसाद सेवा में भागीदार पुण्यात्मा

मुक्ति की यात्रा करते हैं

हम असत्य से सत्य की ओर जायें, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर जायें इसीलिए मनुष्य-जन्म मिला है। और ऋषियों का यही प्रसाद है।

मेरे गुरुदेव १० महीने तो सत्संग, साधन-भजन आदि द्वारा समाजरूपी देवता की सेवा करते थे, २ महीने नैनीताल के जंगल में एकांत में रहने पधारते थे। तब भी वे महापुरुष सुबह घूमने जाते तो छोटी-मोटी गठरी बना लेते कुछ पुस्तकों की। उसे अपने सिर पर रखकर पहाड़ी पर जहाँ आश्रम था वहाँ से नीचे उतरते और दूसरी पहाड़ी पर जहाँ देहातियों के २५-५० घर होते, वहाँ जाकर उन लोगों को 'ईश्वर की ओर', 'पुरुषार्थ परम देव' जैसी, विद्यार्थियों के लिए अमुक-अमुक, नारियों के लिए अमुक पुस्तकें देते। उन महापुरुष ने सिर पर गठरी रखकर पहाड़ी के देहातियों को भी भगवद्भक्ति मिले, उनका शरीर स्वस्थ रहे और जीवन जीवनदाता के काम आने योग्य बने तथा उनके कुल-खानदान का मंगल हो ऐसे साहित्य को पहुँचाने की सेवा की।

तो इतना श्रम करके जिन महापुरुषों ने शास्त्र का प्रसाद लोगों तक पहुँचाया, उन्हीं महापुरुषों का कृपा-प्रसाद सत्संग के रूप में और ऋषि प्रसाद के रूप में ऋषि प्रसाद के सेवकों के द्वारा घर-घर अभी भी पहुँच

रहा है। फर्क यह है कि वे गठरी बाँधकर सिर पर ले जाते थे और अभी उनके पोते... मैं गुरुजी का शिष्य अर्थात् बेटा हुआ और मेरे शिष्य उनके पोते... कोई साइकिल पर तो कोई स्कूटर पर तो कोई बस में तो कोई पैदल थैले में ऋषि प्रसाद लेकर जाते हैं लेकिन काम वही कर रहे हैं। और वे पुस्तकें अनेक होती थीं जबकि 'ऋषि प्रसाद' एक है परंतु इसमें अनेक पहलुओं का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान हर महीने मिलता है। वहाँ तो साल में दो महीने ही गुरुजी ऐसा करते थे, यहाँ तो बारहों महीना लोगों को ताजा प्रसाद मिलता रहता है। मुझे तो लगता है कि मेरे गुरुजी के श्रम से आपका श्रम कम है लेकिन सेवा आपकी दूर तक पहुँचती है। गुरुजी तो एक-दो गाँव में घूमकर साहित्य देते थे, तुम तो दसों गाँव तक पहुँच जाते हो। इसीलिए हजारों नहीं, लाखों घरों में ऋषि प्रसाद जाती है।

ऋषियों की, संतों की, वैदिक संस्कृति की प्रसादी लोगों तक पहुँचाना यह स्वार्थी आदमी के बस का नहीं है। सेवा करके जो वाहवाही चाहता है वह अपनी सेवा का धन खर्च डालता है। 'जहाँ आदर हो वहाँ ऋषि प्रसाद दें और जहाँ अनादर हो वहाँ न दें', नहीं-नहीं, जहाँ अनादर होता है वहाँ खास जाओ।

आदर तथा अनादर, वचन बुरे त्यों भले।
निंदा स्तुति जगत की, धर जूते के तले ।।

वह आदमी ईश्वर को पा लेगा। 'आदर तथा अनादर शरीर का है, मेरा नहीं है। अपना तो उद्देश्य सेवा का है' - जो ऐसा मानेगा, वह मनुष्य दुनिया को बहुत कुछ दे सकता है।

'ऋषि प्रसाद' पत्रिका घर-घर तक पहुँचाने की दैवी सेवा करनेवाले पुण्यात्माओं का हौसला बुलंद है। यह 'ऋषि प्रसाद' पहुँचाने की दैवी सेवा करनेवालों को अपनी योग्यता के अनुसार जैसा भी कोई काम मिलता होगा, वे अगर शांत होकर अपने पिया प्रभु से पूछें कि 'मैंने यह किया, कैसा किया ?' तो मैं दावे से कहता हूँ कि उनका अंतरात्मा कहेगा कि 'बहुत बढ़िया कर रहे हो !' उन्होंने अपने कर्तृत्व का सदुपयोग सत्यस्वरूप ईश्वर की प्रसन्नता के लिए किया है तो उनका अंतरात्मा संतुष्ट होता होगा। हर एक शुभ कर्म कर्ता को संतोष की झलक देता है। ऐसा करते-करते कर्ता का अंतःकरण शुद्ध होता है। कर्म करने के पहले उत्साह होता है, कर्म करते वक्त पौरुष होता है, कर्म करने के बाद कर्म का फल अपने हृदय में फलित होता है। अपने हृदय में शांति, आनंद, प्रसन्नता अथवा अंतरात्मा का धन्यवाद फलित हो तो कर्ता मान ले कि यह कर्म प्रवृत्ति, पराश्रय से तो हुआ लेकिन इसने 'स्व' के आश्रय में ला दिया। जब परमात्मा के निमित्त, प्रभु की प्रसन्नता के निमित्त युद्ध जैसा घोर कर्म करके भी आदमी मुक्ति पा सकता है, अर्जुन, भीष्म मुक्ति पा सकते हैं तो फिर मुक्ति का मार्ग दिखानेवाली 'ऋषि प्रसाद' के दैवी कार्य में भागीदार होनेवाले मुक्ति के रास्ते की यात्रा नहीं कर पायेंगे ? जरूर करते हैं।

राष्ट्रीय कराटे चैम्पियनशिप में गुरुकुल ने जीते १ स्वर्ण व ११ अन्य पदक

भोपाल में ७ से ९ मई तक आयोजित 'सेवेंथ रेंशी कप नेशनल कराटे चैम्पियनशिप' में संत श्री आशारामजी गुरुकुल, छिंदवाड़ा के छात्र-छात्राओं ने १ स्वर्ण, ८ रजत सहित कुल १२ पदक प्राप्त किये। इस प्रतियोगिता में देशभर के विद्यार्थियों ने भाग लिया लेकिन शुरू से ही छाये रहे गुरुकुल के छात्र-छात्राएँ अव्वल नम्बर पर रहे।

स्वर्ण पदक विजेता छात्रा की माँ ने कहा : ''हमें गर्व है गुरुकुल की शिक्षा एवं पूज्य बापूजी की दीक्षा पर, जिसके कारण हमारी बेटी पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद में भी अव्वल है।''

बापूजी ने जीने का सही ढंग सिखाया जीवन का उद्देश्य समझाया

(गतांक से आगे)

प्रणाम करने से होता अमिट लाभ

आत्मज्ञानी महापुरुषों को दंडवत् प्रणाम करने की बहुत महिमा है। इस संदर्भ में शास्त्र का एक प्रसंग बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं : ''मृकंडु नामक ऋषि थे। उनके पुत्र थे मार्कण्डेय। वे बाल्यकाल से ही पिता के संस्कार-सिंचन के अनुसार माता-पिता, गुरुजनों एवं संत-महात्माओं को नमस्कार करते थे। एक बार कोई सिद्ध महात्मा उनके यहाँ आये। पिता ने बालक मार्कण्डेय से कहा : ''बेटा ! महात्माजी को प्रणाम करो।''

बालक मार्कण्डेय ने झुककर प्रणाम किया एवं सिद्धपुरुष की चरणरज को सादर मस्तक पर चढ़ाया। महात्मा उस बालक को एकटक देखते रहे मानो उसके भावी जीवन पर दृष्टिपात कर रहे हों। ऋषि ने पूछा : ''महाराज ! आप इस प्रकार एकटक क्या देख रहे हैं ?''

''बालक तो सुंदर है किंतु इसकी आयु अब बहुत ही कम शेष है।'' इतना कहकर उन सिद्धपुरुष ने पुनः विषादपूर्ण

नेत्रों से बालक की तरफ निहारा।

ऋषि तो अपने लाड़ले पुत्र के विषय में यह दुःखद बात सुनकर हक्के-बक्के रह गये ! उन्होंने हाथ जोड़कर महात्मा से विनती की : ''प्रभो ! इसका कोई उपाय ?''

''जो भी संत-महापुरुष आयें, ऋषि-मुनि आयें, उनके चरणों में इस बालक से प्रणाम करवाओ।'' यह कहकर सिद्धपुरुष चल पड़े। मृकंडु ऋषि ऐसा ही करवाने लगे। एक दिन सप्तर्षि उस मार्ग से पधारे। बालक मार्कण्डेय ने उन्हें खूब भावपूर्वक प्रणाम किया। सप्तर्षियों ने बालक के सिर पर हाथ रखकर दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया : ''आयुष्मान् भव, सौम्य !''

पिता ने कहा : ''महाराज ! इसकी आयु कम है एवं इसको आपके द्वारा दीर्घायु होने का आशीर्वाद मिला है। प्रभो ! अब आपके आशीर्वाद के अनुकूल होने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?''

सप्तर्षि बोले : ''इस बालक को भगवान शंकर की सेवा में, पूजा-आराधना-उपासना में लगा दो, सब ठीक होगा।''

मृकंडु ऋषि ने बालक मार्कण्डेय को देवाधिदेव महादेव की उपासना-आराधना में प्रवृत्त कर दिया। निर्दोष बालक मार्कण्डेय शिवजी की सेवा-पूजा में मग्न हो गया। प्रातःकाल जल्दी उठ के, स्नानादि से पवित्र होकर वह शिवलिंग को स्नान कराता, बिल्वपत्र, फल-फूल, धूप-दीप, नैवेद्य आदि चढ़ाता, प्रार्थना करता, आसन पर बैठ के हाथ में माला लेकर 'ॐ नमः शिवाय' का जप करता, ध्यान करता, स्तुति-स्तोत्रों का गान करता। इस प्रकार समय बीत रहा था।

मृत्यु की घड़ियाँ निकट आ गयीं। लाल-लाल नेत्रोंवाले, काले वर्णवाले यमदूत प्रकट हुए। उन्हें देखकर बालक डर गया। घबराकर शिवलिंग को आलिंगन करके कहने लगा : ''हे भगवान ! ये यमदूत आ गये। बचाओ... बचाओ !''

भगवान शंकर हाथ में त्रिशूल लेकर प्रकट हो गये और यमदूत की छाती पर लात मारी।

शिवजी यमदूत से बोले : ''इस बालक को कहाँ ले जाते हो ?''

यमदूत : ''देवाधिदेव ! इसकी आयु पूरी हो गयी है। सृष्टि के क्रम के अनुसार मैं अपने कर्तव्य का पालन करने आया हूँ।''

''अरे यमदूत ! देखो तो अपने बहीखाते में... इसकी आयु कहाँ पूरी हुई है ?''

यमदूत ने बहीखाता देखा तो बालक के खाते में लम्बी आयु जमा देखी। सृष्टि का संहार करनेवाले देवाधिदेव योगीश्वर पशुपतिनाथ जिसका रक्षण करें उसका कोई बाल तक बाँका कैसे कर सकता है ?

''चलो, भागो यहाँ से !'' रुद्र गरज उठे। यमदूत ने विदा ली। बालक मार्कण्डेय ने शिवजी की स्तुति की, जिससे शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे चिरंजीवी बना दिया। तब से सप्त चिरंजीवियों के बाद आठवें के रूप में इनका नाम आता है। मार्कण्डेय किसके प्रभाव से चिरंजीवी बने ? संत-महापुरुषों, सप्तर्षियों को प्रणाम करने से। ऐसी महिमा है परब्रह्म-परमात्मा को पाये हुए महापुरुषों को प्रणाम करने की !

नमस्कार से रामदास, कर्म सभी कट जाय।

जाय मिले परब्रह्म में, आवागमन मिटाय॥

प्रतिदिन सुबह माता-पिता एवं पूजनीय-आदरणीय गुरुजनों को प्रणाम करो। उनके आशीर्वाद लो। बड़े भाई, बड़ी बहन को भी प्रणाम करो। घर में यदि बड़े लोग इस नियम को अपनायेंगे तो छोटे बालक स्वयं ही उनका अनुकरण करेंगे। परस्पर नमस्कार करने से कुटुम्ब में दिव्य भावनाएँ प्रबल होंगी तो लड़ाई-झगड़ों एवं कटुता के लिए अवकाश ही नहीं रहेगा। संयोगवशात् यदि कुछ खटपट होगी भी तो लम्बी नहीं टिकेगी। परिवार का जीवन मधुर बन जायेगा। परमार्थ साधना सरल हो जायेगा।'' (क्रमशः)

मोक्ष की इच्छावाले के लिए अनिवार्य शर्तें

- श्री अखंडानंदजी सरस्वती

जो अपने जीवन को अपने लक्ष्य की ओर प्रवाहित कर रहा है वह मार्ग में कहीं अटक नहीं सकता। यह अटकना ही आसक्ति का परिचायक है। जहाँ सुख प्रतीत होता है और जिसको अपना-आपा भोक्ता प्रतीत होता है वहाँ वह व्यक्ति आसक्त हुए बिना नहीं रह सकता। विषय में सत्यत्व एवं रमणीयता की तथा विषयी में भोक्तृत्व की भ्रांति मिलकर आसक्ति को जन्म देती है। कहीं कभी किसीसे चिपक जाने का नाम आसक्ति है। परंतु जो गतिशील है उसके लिए देश, काल और वस्तु सदैव बदलते रहते हैं। फिर वह कहाँ, कब, किससे, क्यों और कैसे चिपकेगा ?

४ प्रकार की आसक्तियाँ होती हैं : कर्मासक्ति, फलासक्ति, कर्तृत्वासक्ति और अकर्तृत्वासक्ति। सुख किसी विशेष कर्म से ही प्राप्त हो यह आग्रह कर्मासक्ति है। अरे, सुख को आने दो, उसके द्वार का आग्रह क्यों करते हो ? पतिदेव का स्वागत करो, फिर चाहे वे इस द्वार से आवें या उस द्वार से, घर की कीमती कार से आवें या किराये की सामान्य टैक्सी से। कर्मासक्ति में कर्म का बंधन है।

कर्ता और कर्म के बीच में कर्म की प्रेरणा होती है और कर्म और भोक्ता के बीच में कर्मफल होता है। जब प्रेरणा सुख होती है, तब कर्मफल में भोक्ता सम नहीं रह पाता। कर्मफल प्रेरणा के अनुकूल होने पर राग उत्पन्न करता है और प्रतिकूल होने पर द्वेष। यही फलासक्ति है। जिसकी प्रेरणा कर्तव्य का पालन या भगवान की प्रसन्नता अथवा प्राप्त परिस्थिति का सदुपयोग है वह सर्वत्र सुख का अनुभव कर सकता है। धनभागी है वह जिसमें फलासक्ति नहीं रहती।

कोई-न-कोई काम करते ही रहें यह आग्रह कर्तृत्वासक्ति है व अपने आत्मा को अकर्ता मानकर कर्म न करने का आग्रह अकर्तृत्वासक्ति है।

विषय हो, कर्म हो परंतु आसक्ति न हो, तब आप कहीं बीच में अटकेंगे नहीं और अंत में ईश्वरप्राप्ति कर लेंगे।

इस प्रकार (१) सत्यनिष्ठा तथा (२) अनासक्ति योग - ये दो आवश्यक शर्तें हैं जो प्रत्येक मुमुक्षु के जीवन में अनिवार्य हैं। परंतु मोक्ष-सम्पादन के कुछ अन्य आवश्यक अंग भी हैं। वे हैं : (३) पांडित्य (४) धैर्य (५) संन्यास एवं (६) आत्माभ्यास।

सदसद् विवेकवती बुद्धि का नाम पंडा है। वह बुद्धि जिसके पास है उस विवेकी पुरुष को पंडित कहते हैं। मुमुक्षु में यह पांडित्य अपेक्षित है, अन्यथा यह सम्भावना है कि उसकी कभी मिथ्या में ही सत्यबुद्धि हो जायेगी। शास्त्रों को घोट-पीसकर कंठाग्र कर लेना अथवा उनका अध्यापन या प्रवचन करने के सामर्थ्य का नाम पांडित्य नहीं है।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन। (मुंडकोपनिषद् : ३.२.३)

यह श्रुति इस संबंध में स्पष्ट कथन करती है कि यह आत्मा प्रवचन, मेधा या बहुत सुनने से प्राप्त नहीं होता।

सुख और दुःख दोनों को सहन करने का नाम धैर्य होता है। सुख सहन नहीं होता तो या तो हृदयाघात (हार्टफेल) हो जाता है या बुद्धि उच्छृंखल हो जाती है। वह आदमी उपद्रव करने लगता है। 'हमको यह स्त्री चाहिए, यह भोग चाहिए' - इस प्रकार की माँग बढ़ जाती है। और 'हम तो यह करेंगे, वह करेंगे' - इस प्रकार कर्म अनियंत्रित हो जाता है। इसी तरह जब दुःख सहन नहीं होता तो आदमी छाती पीट-पीटकर रोता है, पागल हो जाता है, डाकू हो जाता है या फिर उसको हृदयाघात हो जाता है।

समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते। (गीता : २.१५)

जो सुख-दुःख में सम है वही धीर पुरुष है और वही अमृतत्व के योग्य होता है। यदि आप दुनिया में कुछ मिल जाने से उच्छृंखल हो जाते हैं और खोने से रोने लगते हैं तो आत्मचिंतन कैसे करेंगे ?

जो विवेकी है, धीर है उसे सर्व-कर्म-संन्यास के लिए सम्मुख होना चाहिए। यह एक पुरुषार्थ है। मोक्ष के अतिरिक्त दूसरी वस्तुओं को प्राप्त करने का जो प्रयास है वहाँ से उपराम होने का नाम सर्व-कर्म-संन्यास है। जीवन में प्रयत्न तो रहे परंतु दूसरी वस्तुओं को पाने के लिए प्रयत्न न रहे, अपनी सहज पूर्णता के लाभ के लिए प्रयत्न रहे, अपनी मुक्ति के लिए प्रयत्न रहे।

गुरुमुख से वेदांतशास्त्र का तात्पर्य-निश्चय करना श्रवण कहलाता है। उस श्रुत अर्थ का अनुकूल युक्तियों से चिंतन तथा बाधक युक्तियों का खंडन मनन कहलाता है। श्रवण और मनन किये हुए अर्थ में बुद्धि का तैलधारावत् प्रवाह निदिध्यासन कहलाता है। निदिध्यासन में विजातीय वृत्ति का तिरस्कार है और सजातीय वृत्ति का प्रवाह है। यह जो श्रवण, मनन, निदिध्यासन है इसीका नाम आत्माभ्यास है।

अभ्यास माने दुहराना। आप जीवन में बार-बार किसको दुहराते हैं ? मकान-दुकान, रुपया, दोस्त, दुश्मन - इस अनात्मा को ही तो दुहराते हैं। यह अनात्मा का अभ्यास, जो जीवन में प्रविष्ट हो गया है, इसके निवारण के लिए आत्माभ्यास करना पड़ता है कि 'मैं नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त ब्रह्म हूँ। मैं असंग हूँ, मैं साक्षी हूँ।' इत्यादि। इस अभ्यास से ही उस ज्ञानबल की उत्पत्ति होती है जिससे भ्रम की निवृत्ति होती है। केवल अपने को असंग, साक्षी मान लेने से और अभ्यास न करने से भ्रांति निवृत्त नहीं होती।

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

(१) .... की तरफ मुख करके ध्यान-भजन करने से दिव्य तरंगें साधक को मदद करती हैं।

(२) ..... साधक की शक्ति को निगल जाते हैं।

(३) परस्पर .... करने से कुटुम्ब में दिव्य भावनाएँ प्रबल होंगी तो लड़ाई-झगड़ों एवं कटुता के लिए अवकाश ही नहीं रहेगा।

(४) जो वर्षा ऋतु में रात को देर से सोयेंगे उनको .... पकड़ेगा।

(५) जिनके जीवन में वैदिक ज्ञान, आत्मज्ञान देनेवाले संत-सद्गुरु नहीं हैं, जिन्हें ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों में श्रद्धा नहीं है वे तो ...... हैं।

अपनी महिमा का पूरा पता स्वयं गुरुदेव को भी नहीं !

- श्री उड़िया बाबाजी

परम तत्त्व का पता गुरुकृपा से लगता है और गुरुकृपा होती है गुरुदेव की भक्ति से। गुरु धन, भोजन या सेवा से प्रसन्न नहीं होते, वे तो केवल आज्ञा-पालन में तत्पर होने से प्रसन्न होते हैं और इसीसे शिष्य योग्य बन सकता है।

गुरुदेव को छोड़कर साधन के विषय में किसीसे कुछ पूछने की आवश्यकता नहीं है। गुरुकृपा से ही वैराग्य हो जाता है और सच्चे मार्ग का पता भी लग जाता है। गुरुदेव शिष्य को तारने की शक्ति रखते हैं।

गुरु की महिमा भगवान की महिमा से भी बढ़कर है, गुरुकृपा से ही भगवान की प्राप्ति होती है।

शास्त्रों में भगवन्नाम की बड़ी महिमा बतलायी गयी है। यहाँ तक कि स्वयं भगवान भी भगवन्नाम की महिमा नहीं जानते। इसी प्रकार गुरु-महिमा का पता स्वयं गुरुदेव को भी नहीं होता। केवल शिष्य ही गुरुकृपा से गुरु-महिमा का कुछ अनुभव कर सकता है। गुरुकृपा से उपदेश ग्रहण करके शिष्य संसार-सागर को पार कर लेता है, अतः संसार में मानव-शरीर पाकर जीव का सबसे बड़ा कर्तव्य गुरुकृपा प्राप्त करना है।

आजकल शिष्य की गुरु में ईश्वर-भावना दृढ़ नहीं होती, इसीसे उसे गुरु के सिवा किसी अन्य इष्ट की आवश्यकता होती है। यदि शिष्य की गुरु में सुदृढ़ ईश्वर-भावना हो तो उसे ईश्वरोपासना की भी आवश्यकता नहीं होगी। गुरु की सेवा से ही उसे ईश्वर की प्राप्ति हो जायेगी।

जो सेवा तो करता है लेकिन आज्ञा की अवहेलना करता है उस पर गुरुदेव उतने प्रसन्न नहीं रहते। जो सच्चा आज्ञापालक है वह सेवा भी तन-मन-धन से, पूरी तत्परता से करेगा और सब कुछ सुंदर ढंग से करेगा। आज्ञापालन में सब कुछ आ जाता है। तभी 'रामायण' में आता है : अग्या सम न सुसाहिब सेवा। आज्ञापालन के समान उत्तम परमात्मा एवं सद्गुरु की अन्य कोई सेवा नहीं है।

''गुरुदेव से प्रार्थना करके थोड़ी देर के लिए अपने श्वासोच्छ्वास को निहारो अथवा कंठकूप में अपने साकार इष्ट को निहारने और ध्यान करने का प्रयास करो, चिंतन में तल्लीन हो जाओ। जो कुछ करो वह एकाग्रतापूर्वक करो। सुबह उठकर भी वही ध्यान करो। कंठकूप में धारणा करते-करते दो दिन में भी स्वप्न में इष्ट व गुरु के स्पष्ट दर्शन एवं वार्तालाप हो सकता है। अधिक-से-अधिक ९० दिन में होगा।'' - पूज्य बापूजी
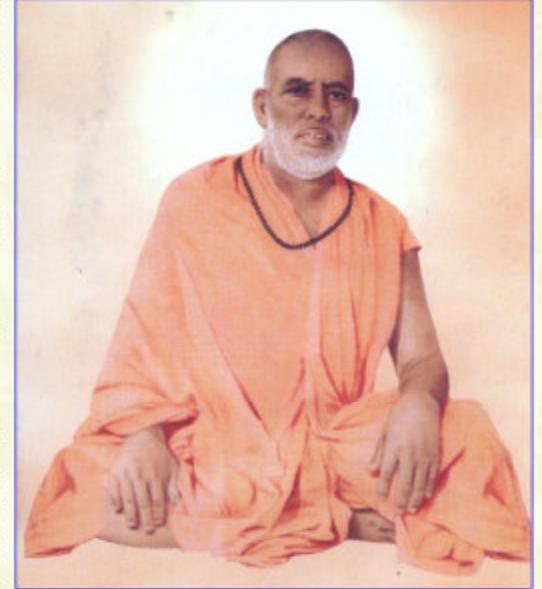
गाय की सेवा करने से सब कामनाएँ सिद्ध होती हैं। गाय को सहलाने से, उसकी पीठ आदि पर हाथ फेरने से वह प्रसन्न होती है। उसके प्रसन्न होने पर साधारण रोगों की तो बात ही क्या है, बड़े-बड़े असाध्य रोग भी मिट जाते हैं। असाध्य रोगों में लगभग ६-१२ महीने यह प्रयोग करना चाहिए।

जघन्य अपराध से सावधान करते संत-शास्त्र

जब से सृष्टि हुई है तब से मानव को चौरासी के चक्कर से छुड़ाकर अपने स्वरूप में स्थिति कराने के लिए महापुरुष धरा पर अवतरित होते रहे हैं। पर साथ ही ऐसे महापुरुषों की निंदा करके समाज को गुमराह करनेवाले निंदक भी अनादि काल से पैदा होते रहे हैं।

निंदकों का तो सर्वनाश हो ही जाता है, साथ ही समाज के जो लोग उनके प्रभाव में आ जाते हैं वे भगवद्-आनंद, ज्ञान, शांति और मुक्ति के सुमार्ग से च्युत होकर पाप, ताप, अशांति, खिन्नता के शिकार हो जाते हैं और अपनी २१ पीढ़ियोंसहित नरकगामी हो जाते हैं।

लोग इस महा अपराध से बच जायें इसीलिए शास्त्रों व महापुरुषों ने सभीको निंदकों से सावधान किया है। संत टेऊँरामजी महाराज ने एक विस्तृत पद्य-रचना द्वारा समाज को जागृत किया है :

गुरु की निंदा जो करे,
सो नर नरके जाय।
गुरु निंदक दुइलोक में,
टेऊँ सुख ना पाय ॥
अवगुन में यह अवगुन मंदा,
बिन कारन करनी पर निंदा।
ताँते गुरु निंदा मंद मानो,
दुर्गंध से भी दुर्गंध जानो।
निंदक के मन में ही भावे,
काक कीट ज्यों दुर्गंध खावे।
कालकूट से भी अधिकाई,
गुरु निंदा को जानो भाई।
गुरु निंदा सम पाप न कोई,
कह टेऊँ यह ग्रंथनि गोई१ ॥१॥
सत्गुरु की जो निंदा करता,
कीट पतंग अहि२ जोनी धरता।
सत्गुरु का जो कर अपमाना,
सो नर होवे सूकर स्वाना।
सत्गुरु से जो मुख को फेरे,
सो नर पावत दूख घनेरे।
सत्गुरु से जो मन उलटावे,
बारबार सो जमपुर जावे।
तर्क दृष्टि कर जो गुरु त्यागे,
टेऊँ कोटि विघ्न तिहँ लागे ॥२॥
षट् शास्त्र दश अष्ट पुराना,
चार वेद पढ़ करहिं वख्याना।
मंतर तंतर यंतर साधे,
सब देवों को नित आराधे।
कर्म कांड करहैं बहुतेरे,
तीर्थ नावे जाय घनेरे।
भावें३ ऋद्धि सिद्धि बहुत चलावे,
जग में बहुते यश को पावे।
परंतु गुरु निंदक जो होई,
कह टेऊँ गति पाय न सोई ॥३॥

गुरु का निंदक है अति पापी,
शांति न पावत हो संतापी ।
गुरु का निंदक नीच ते नीचा,
पुनि पुनि होवे ताँकी मीचा४ ।
गुरु का निंदक मति का खोटा,
बार बार खावे जम चोटा ।
गुरु का निंदक मन का मैला,
जहँ जावे तहँ खावे ठेला ।
गुरु का निंदक कपटी झूठा,
कह टेऊँ ताँसे हरि रूठा ।।४।।
गुरु का निंदक नरके पड़हीं,
गीले काष्ठ ज्यों तहँ जरहीं ।
गुरु का निंदक नीचे गिरता,
टूटा फल ज्यों भू में पड़ता ।
गुरु का निंदक अहनिश धावे,
चल दल दल ज्यों शांति न पावे ।
गुरु का निंदक तेज विहीना,
ग्रहण समय ज्यों रवि छवि हीना ।
गुरु निंदक सहमूल विनासे,
टेऊँ ज्यों तरु जड़ सह नासे ।।५।।

(क्रमशः)

१. ग्रंथों के कथन हैं २. साँप ३. चाहे ४. मृत्यु

चित्त के दोषों का शमन करने का प्रयोग

अहंकार, चिंता और व्यर्थ का चिंतन साधक की शक्ति को निगल जाते हैं। इनको मिटाने के लिए एक सुंदर मंत्र योगी गोरखनाथजी ने बताया है। इसमें कोई विधि-विधान नहीं है। रात को सोते समय इस मंत्र का जप करो, संख्या का कोई आग्रह नहीं है। इस मंत्र से आपके चित्त की चिंता, तनाव, खिंचाव, दिक्कतें जल्दी शांत हो जायेंगी और साधन-भजन में बरकत आयेगी। मंत्र उच्चारण में थोड़ा कठिन जैसा लगेगा लेकिन याद रह जाने पर आसान हो जायेगा। बाहर के रोग तो बाहर की औषधि से मिट सकते हैं लेकिन भीतर के रोग बाहर की औषधि से नहीं मिटेंगे और इस मंत्र से टिकेंगे नहीं। हमारी जो जीवनधारा है, जीवनीशक्ति है, चित्शक्ति है उसीको उद्देश्य करके यह मंत्र है :

ॐ चित्तात्मिकां महाचित्तिं चित्तस्वरूपिणीं आराधयामि चित्तजान् रोगान् शमय शमय ठं ठं ठं स्वाहा ठं ठं ठं स्वाहा।

'हे चित्तात्मिका, महाचित्ती, चित्तस्वरूपिणी ! मैं तेरी आराधना करता हूँ। जगत-शक्तिदात्री भगवती ! मेरे चित्त के रोगों का तू शमन कर।'

'ठं' बीजमंत्र है, यह बड़ा प्रभाव करता है। किसीमें लोभ, किसीमें मोह, किसीमें शराब पीने का, किसीमें अहंकार का, किसीमें शेखी बघारने का दोष होता है। चित्त में दोष भरे हैं इसलिए तो चिंता, भय, क्रोध, अशांति है और जन्म-मरण होता है।

इसके जप से आद्यशक्ति चेतना चित्त के दोषों को दूर कर देती है, चित्त को निर्मल कर देती है। सीधे लेट गये, यह जप किया। जब तक निद्रा न आये तब तक इसका प्रयोग करें। निद्रा आने पर अपने-आप ही छूट जायेगा। रात को जप करके सोने से सुबह तुम स्वस्थ, निर्भय, प्रसन्न होकर उठोगे।

भगवान के मंत्र हों और भगवान को अपना मानकर प्रीतिपूर्वक जप करें तो चित्त भगवदाकार होकर भगवद्रस से पावन हो जाता है। भगवद्रस के बिना नीरसता नहीं जाती।

साधना में तीव्र उन्नति हेतु ६ संकल्प

गुरुपूनम महोत्सव साधकों को अगली ऊँचाइयों पर लाने का महोत्सव है। इस गुरुपूनम का नया पाठ। पहला, ब्राह्ममुहूर्त में तुम उठते होंगे। जो नहीं उठता होगा वह भी उठने का इस दिन से पक्का संकल्प करे कि 'मैं सुबह ब्राह्ममुहूर्त में उठूँगा।' सूरज उगने से सवा दो घंटे पहले से ब्राह्ममुहूर्त शुरू हो जाता है। फिर आप सूर्योदय से दो घंटा, डेढ़ घंटा या एक घंटा भी पहले उठते हैं तो ब्राह्ममुहूर्त में उठे। ब्राह्ममुहूर्त में उठने से भाग्योदय होता है, आरोग्य, आयुष्य बढ़ता है और नीच योनियों से सदा के लिए पिंड छूटता है।

दूसरा प्रण, उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ बैठकर ध्यान-भजन, साधना करना। इससे दिव्य तरंगें साधक को मदद करती हैं।

तीसरा संकल्प, आप जप करते हैं तो एक प्रकार की शक्ति पैदा होती है। अतः जब ध्यान-भजन करें तो नीचे विद्युत का कुचालक आसन बिछा हो, जिससे आपके जप की जो विद्युत है उसे अर्थिंग न मिले। आसन ऐसा हो कि कभी थकान महसूस हो तो आप लेट के शरीर को खींचकर ढीला छोड़ सकें और २-५ मिनट शवासन में चले जायें। पूजा के कमरे में ऐसा वातावरण हो कि उसमें और कोई संसारी व्यवहार न हो। इससे वह कमरा साधन-भजन की तरंगों से तरंगित रहेगा। कभी भी कोई मुसीबत आये या कुछ पूछना है तो जैसे मित्र से टेलिफोन पर बात करते हैं ऐसे गुरु और परमात्मा रूपी मित्र से सीधी बात करने का आपका एक साधना-मंदिर बना दो। उसमें हो सके तो कभी ताजे फूल रखो - सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। ताकि वे ज्ञानतंतुओं को पुष्ट कर दें। परफ्यूम तो काम-केन्द्र को उत्तेजित करते हैं लेकिन ये फूल, तुलसी पुष्टिदायी हैं।

चौथी बात, त्रिबंध (मूलबंध, जालंधर बंध, उड्डीयान बंध) करके प्राणायाम करेंगे, आज से यह पक्का वचन दो। जो ३ करते हैं वे ४-५... ऐसे बढ़ाने का प्रयत्न करें। १० तक करें। (किसीको फेफड़ों,

हृदय आदि की कोई बीमारी हो तो वैद्य की सलाह लेकर प्राणायाम करें।)

पाँचवाँ संकल्प, साधन करते समय जब भी मौका मिले, जीभ को तालू में लगाना या तो दाँतों के मूल में लगाना। इससे आप जिस किसीके प्रभाव में नहीं आयेंगे। आपके प्रभाव में निगुरे लोग आयेंगे तो उनको फायदा होगा लेकिन आप उनके प्रभाव में आयेंगे तो आपको घाटा होगा। हमारे साधक किसी निगुरे के प्रभाव में न आयें। मैं तो कहता हूँ कि सगुरों के प्रभाव में भी न आयें। जीभ तालू में लगाने से यह काम हो जायेगा।

मनुष्य-जाति का बड़े-में-बड़ा शत्रु है सुख का लालच और दुःख का भय। जानते हैं लेकिन सुख के लालच से जाना अनजाना करके गलत काम कर लेते हैं, फिर परिणाम में बहुत चुकाना पड़ता है। दुःख के भय से बचना हो तो जब भी दुःख का भय आये अथवा कोई डाँटे, उस समय जीभ तालू में लगा दो।

आबू की पुरानी बात है। किन्हीं संत से हम मिलने गये थे। वे बोले : ''महाराजजी ! यहाँ रात को शेर आते हैं और बंदरों को उठाकर ले जाते हैं।''

मैंने कहा : ''बंदर ऊपर होते हैं और शेर नीचे, फिर वे कैसे उठाते हैं ?''

''शेर दहाड़ता है तो बंदर डर के मारे गिर पड़ते हैं और शेर उन्हें उठाकर ले जाते हैं।'' तो भय प्राणी के लिए हानिकारक है।

किसी भी बॉस के पास जाते हैं या इंटरव्यू देने जाते हैं अथवा कहीं जाते हैं और आप डरते हैं तो विफल हो जायेंगे। जीभ तालू में लगा के उसके सामने बैठो, उसका प्रभाव आप पर नहीं पड़ेगा, आपका प्रभाव उस पर पड़ेगा, आपका चयन कर लेगा।

जीभ तालू में लगाना इसको 'खेचरी मुद्रा' बोलते हैं। इससे दूसरे फायदे भी होते हैं और एकाग्रता में बड़ी मदद मिलती है।

छठा साधन, कभी बैठे तो श्वास अंदर गया तो 'ॐ' या 'राम', बाहर आया उसको गिना, श्वास अंदर गया तो 'आरोग्य', बाहर आया गिना, ऐसे यदि १०८ तक श्वास गिनने का अभ्यास बना लेते हैं तो सफलता, स्वास्थ्य और खुशी तुम्हारे घर की चीज हो जायेगी। कौन नहीं चाहता है सफलता, स्वास्थ्य, खुशी ? सब चाहते हैं। जिन्होंने गुरुमंत्र लिया है उनको यह विद्या प्रसादरूप में दे रहे हैं तो फलेगी। यदि इसकी महिमा सुनकर निगुरे करेंगे तो उनका उत्थान अपने बल से होगा और साधक गुरु का प्रसाद समझ के लेंगे तो उसमें भगवान की और गुरु की कृपा भी काम करेगी।

'जो लोग आशा के गुलाम बनते हैं वे सारी दुनियाँ के गुलाम बने रहते हैं। आशा जिन लोगों की दासी बनती है उन लोगों के लिए सारी दुनियाँ गुलाम बन जाती है।'

कल कभी कल होकर नहीं आता। वह जब भी आता है, वर्त्तमान होकर, आज होकर ही आता है। इसलिए वर्त्तमान में ही जियो। जो बीत गया उसको भूल जाओ।

जो बीत गई सो बीत गई,
उस बात का शिकवा कौन करे ?
जो तीर कमान से निकल गई,
उस तीर का पीछा कौन करे ?

वास्तविक बल कौन-सा है ?

एक दिन राजा विश्वामित्र मंत्रियों के साथ शिकार के लिए गये थे। वन में प्यास से व्याकुल हो वे महर्षि वसिष्ठजी के आश्रम में पहुँचे।

वसिष्ठजी ने उनका स्वागत किया। आश्रम में एक कामधेनु गाय थी जिसका नाम था नंदिनी, जो सभी कामनाओं को पूर्ण करती थी। वसिष्ठजी ने खाने-पीने योग्य पदार्थ, बहुमूल्य रत्न, वस्त्र आदि जिस-जिस वस्तु की कामना की उनको कामधेनु ने प्रस्तुत कर दिया। महर्षि ने उन वस्तुओं से विश्वामित्र का सत्कार किया। यह देख विश्वामित्र विस्मित होकर बोले : ''ब्रह्मन् ! आप दस करोड़ गायें अथवा मेरा सारा राज्य लेकर इस नंदिनी को मुझे दे दें।''

वसिष्ठजी : ''देवता, अतिथि और पितरों की पूजा एवं यज्ञ के हविष्य आदि के लिए यह यहाँ रहती है। इसे तुम्हारा राज्य लेकर भी नहीं दिया जा सकता।''

''मैं इसको बलपूर्वक ले जाऊँगा। मुझे अपना बाहुबल प्रकट करने का अधिकार है।''

''तुम राजा और बाहुबल का भरोसा रखनेवाले क्षत्रिय हो। अतः जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो।''

विश्वामित्र बलपूर्वक गाय का अपहरण कर उसे मारते-पीटते ले जाने का प्रयास करने लगे। नंदिनी विश्वामित्र के भय से उद्विग्न हो उठी और डकराती हुई वसिष्ठजी की शरण में गयी। उसे मार पड़ रही थी फिर भी वह आश्रम से अन्यत्र नहीं गयी।

वसिष्ठजी : ''कल्याणमयी ! मैं तुम्हारा आर्तनाद सुनता हूँ परंतु क्या करूँ ? विश्वामित्र तुम्हें बलपूर्वक हर के ले जा रहे हैं। मैं क्या कर सकता हूँ ? मैं एक क्षमाशील ब्राह्मण हूँ।''

नंदिनी ने वसिष्ठजी से प्रार्थना की : ''भगवन् ! विश्वामित्र के सैनिक मुझे कोड़ों से मार रहे हैं। मैं अनाथ की तरह क्रंदन कर रही हूँ। आप क्यों मेरी उपेक्षा कर रहे हैं ?''

वसिष्ठजी : ''क्षत्रियों का बल उनका तेज है और
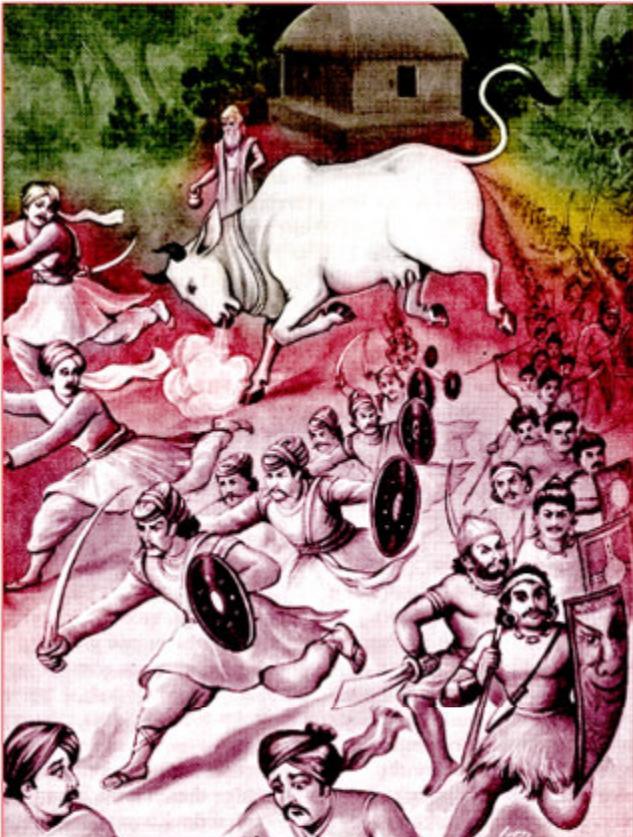
ब्राह्मणों का बल क्षमा है। मैं क्षमा अपनाये हुए हूँ, अतः तुम्हारी रुचि हो तो जा सकती हो।''

नंदिनी : ''भगवन् ! क्या आपने मुझे त्याग दिया ? आपने त्याग न दिया हो तो कोई मुझे बलपूर्वक नहीं ले जा सकता।''

''मैं तुम्हारा त्याग नहीं करता। तुम यदि रह सको तो यहीं रहो।''

इतना सुन नंदिनी क्रोध में आ गयी और उसने अपने शरीर से म्लेच्छ सेनाओं को उत्पन्न किया जो अनेक प्रकार के आयुध, कवच आदि से सुसज्ज थीं। उन्होंने देखते-देखते विश्वामित्र की सेना को तितर-बितर कर दिया। अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से घायल सेनाओं के पाँव उखड़ गये। नंदिनी ने उन्हें तीन योजन तक खदेड़ दिया।

यह देख विश्वामित्र बाणों की वर्षा करने लगे परंतु वसिष्ठजी ने उन्हें बाँस की छड़ी से ही नष्ट कर दिया। वसिष्ठजी का युद्ध-कौशल देख विश्वामित्र आग्नेयास्त्र आदि दिव्यास्त्रों का प्रयोग करने लगे। वे सब आग की लपटें छोड़ते हुए वसिष्ठजी पर टूट पड़े परंतु वसिष्ठजी ने ब्रह्मबल से प्रेरित छड़ी के द्वारा सब दिव्यास्त्रों को भी पीछे लौटा दिया।

फिर वसिष्ठजी बोले : ''दुरात्मा गाधिनंदन ! अब तू परास्त हो चुका है।

यदि तुझमें और भी उत्तम पराक्रम है तो मेरे ऊपर दिखा।'' ललकारे जाने पर भी विश्वामित्र लज्जित होकर उत्तर न दे सके। ब्रह्मतेज का यह आश्चर्यजनक चमत्कार देखकर विश्वामित्र क्षत्रियत्व से खिन्न एवं उदासीन होकर बोले : धिग् बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजोबलं बलम्। 'क्षत्रिय बल तो नाममात्र का ही बल है, उसे धिक्कार है ! ब्रह्मतेजजनित बल ही वास्तविक बल है।' ऐसा सोच के विश्वामित्र राजपाट का त्याग कर तपस्या में लग गये।

क्रोध को स्वयं पर हावी क्यों होने देते हो ?

एक शिष्य ने अपने गुरु से कहा : ''मैं बहुत जल्दी क्रोधित हो जाता हूँ। कृपया मुझे इससे छुटकारा दिलायें।''

गुरु ने कहा : ''यह तो बहुत विचित्र बात है ! मुझे क्रोधित होकर दिखाओ।''

''अभी तो मैं नहीं हो सकता।''

''क्यों ?''

''यह अचानक होता है।''

''ऐसा है तो यह तुम्हारी प्रकृति नहीं है। यदि यह तुम्हारे स्वभाव का अंग होता तो तुम मुझे यह किसी भी समय दिखा सकते थे। तुम किसी ऐसी चीज को स्वयं पर हावी क्यों होने देते हो जो तुम्हारी है ही नहीं ?''

इस वार्तालाप के बाद शिष्य को जब कभी क्रोध आने लगता तो वह गुरु के शब्द याद करता। इस प्रकार उसने शांत और संयमित व्यवहार को अपना लिया।

क्रोध दूर करने का एक सरल प्रयोग भी है, जो पूज्य बापूजी सत्संग में बताते हैं : ''क्रोध आये तो मुट्ठियाँ बंद कर लो। दोनों हाथों की मुट्ठियाँ ऐसे बंद करें कि नखों के दबाव से हथेलियाँ दबें। इससे क्रोध दूर होने में मदद मिलेगी।''

गुरु की ऊँचाई व शिष्य की श्रद्धा का संगम : गुरुपूर्णिमा

व्यासपूनम का उद्देश्य

और सब पूनमें हैं लेकिन यह पूनम गुरुपूनम, बड़ी पूनम है । और उत्सव व पर्व उल्लास, आनंद के लिए मनाये जाते हैं लेकिन यह उत्सव और पर्व आत्मा-परमात्मा की एकता के लिए मनाया जाता है । इस दिन गुरु के दर्शन व मानस-पूजन से वर्षभर के सभी व्रत-पर्वों का पुण्यफल फलित हो जाता है । इसमें गुरु की ऊँचाई और शिष्य की श्रद्धा, गुरु की करुणा और शिष्य की तत्परता का मिलन होता है । दुःख-दरिद्रता, शोक-मोह का निवारण करने की जिसकी इच्छा हो उसे साधक या शिष्य कहते हैं और दुःख-दरिद्रता, शोक-मोह को निवृत्त करके मुक्ति प्रदान करने का सामर्थ्य जिनमें होता है उनको सद्गुरु बोलते हैं । हर व्यक्ति औरों के अनुभव से लाभान्वित होता है । विद्यालय और महाविद्यालयों में मास्टरों-प्राध्यापकों के सहारे अथवा किताबों के सहारे विद्यार्थी दूर का देखता है लेकिन वह प्रत्यक्ष ज्ञान को देखता है और जो स्वर्ग आदि की भावना करता है वह परोक्ष ज्ञान को जानता है । लेकिन ब्रह्मज्ञान न इन्द्रिय-प्रत्यक्ष है, न परोक्ष है । ब्रह्मज्ञान 'साक्षात् अपरोक्ष' है, जो सदा रहता है । जो इन्द्रिय-प्रत्यक्ष को भी जानता है और स्वर्ग के परोक्ष को भी जानता है वह 'साक्षात् अपरोक्ष' है । यह व्यासपूनम स्वर्गसुख अथवा संसारसुख नहीं, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष नहीं, साक्षात् अपरोक्ष आत्मा का सुख जगाने का संदेश देती है ।
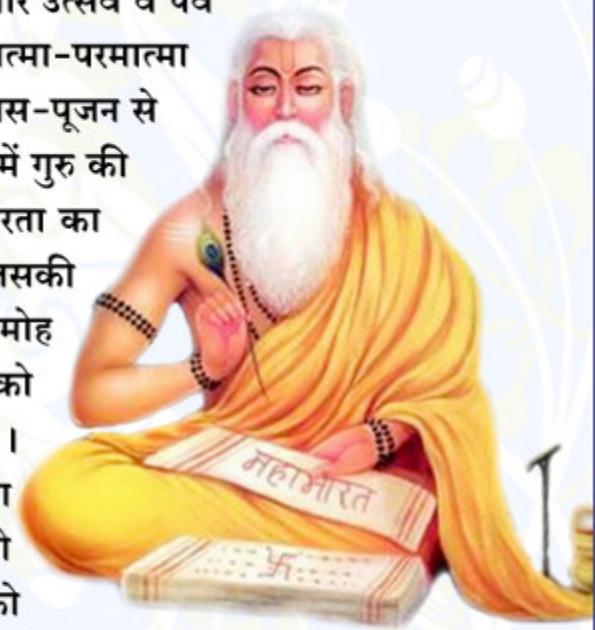
'व्यास' उसीको कहते हैं जो तुम्हारी बिखरी हुई वृत्तियों की व्यवस्था करते हैं । व्यासजी और व्यासस्वरूप ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का पूजन ज्ञानस्वरूप आत्मा का पूजन है । उनका आदर अपने जीवन का आदर है । शरीर को तो आदर बहुत मिला, वह आदर आखिर श्मशान में पूरा हो जाता है लेकिन आपके आत्मा का आदर करना आपके लिए जरूरी है और व्यासपूनम कहती है कि भाई ! जिससे जाना जाता है, उसको जानो, जिससे देखा

जाता है उसको देखो, जिससे सुना जाता है उसीको सुनो और आप मुक्तस्वरूप हो जाओ। मौत आकर गला दबोच दे और सब यहाँ धरा रह जाय उसके पहले वहीं पहुँचो जहाँ मौत की दाल नहीं गलती है।

गुरु समान दाता नहीं, जाचक सिष्य समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्हा दान ॥

तीन लोक की सम्पदा गुरु दान में दे डालते हैं। तीन लोक के स्वामी को हमारे हृदय में जगा देते हैं। ऐसे ब्रह्मज्ञानी गुरुओं के चरणों में हमारा बार-बार प्रणाम है, चाहे फिर वे व्यास के रूप में हों, चाहे दत्तात्रेयजी के रूप में हों, चाहे सनकादिक, शुकदेवजी, अष्टावक्रजी के रूप में हों, चाहे वसिष्ठजी, पराशरजी के रूप में हों, चाहे आद्य शंकराचार्यजी, कबीरजी, नानकजी, लीलाशाहजी के रूप में हों अथवा व्यापक ब्रह्मरूप में हों।

गुरुपूर्णिमा का पावन संदेश

इस गुरुपूनम का संदेश यह है कि मुक्ति हमारा लक्ष्य है, जन्मसिद्ध अधिकार है। मुक्त होना यह सबके अधिकार में है। साधन साध्य से अभिन्न है और साधन सब कोई कर सकते हैं। परमात्मप्राप्ति में अपने को अनधिकारी न मानो, अयोग्य न मानो और परमात्मा से दूरी न मानो, परमात्मप्राप्ति में निराशा के विचार को न आने दो। साध्य की प्राप्ति करने में साधक स्वाधीन व समर्थ है। ज्यों-ज्यों राग-द्वेष क्षीण होता जायेगा त्यों-त्यों शांति बढ़ती जायेगी, ज्यों-ज्यों शांति बढ़ेगी त्यों-त्यों सामर्थ्य आयेगा। शांति स्वाधीनता और सामर्थ्य की जननी है। लेकिन सामर्थ्य और शांति का उपयोग अगर नश्वर चीजों में करेगा तो कमाया-खाया, संग्रह किया... अंत में छोड़कर मर जायेगा, समय नष्ट हो जायेगा। सामर्थ्य का उपयोग परम समर्थ तत्त्व को जानने में करे तो इसी जन्म में परम समर्थ तत्त्व को जान सकता है।

जो भी कुछ कर्म करो, न द्वेष से प्रेरित होकर करो न राग से प्रेरित हो के करो, परमात्मा की प्रसन्नता के भाव से प्रेरित हो के तुम कर्म करोगे तो गुरुपूनम वास्तव में तुम्हारे लिए परम गुरु-तत्त्व का प्रसाद प्रकट कर देगी।

अनंत गुना फलदायी मानस-पूजा

व्यासपूर्णिमा के दिन इस उत्सव-निमित्त साधक को व्रत करना चाहिए और वह व्रत तब तक बना रहे जब तक उस सच्चिदानंदस्वरूप परमात्मा की ठीक से स्नेहमयी पूजा सम्पन्न नहीं होती। षोडशोपचार से पूजा करने का सामान्य पूजा से कई गुना ज्यादा फल माना गया है परंतु मानस-पूजा का प्रभाव और अधिक माना गया है। तो पूर्णिमा के एक दिन पहले ही रात्रि को सोते समय संकल्प करें कि 'कल सुबह हम नींद में से उठते ही गुरु के दिये हुए ज्ञान और गुरुस्वरूप परमात्मा का चिंतन करेंगे। परमेश्वर-तत्त्व जिनमें प्रकटा है उन सद्गुरुओं को तो देखा भी है। मन-ही-मन उनका मानसिक पूजन करेंगे।'

गुरुपूनम की सुबह उठे और मन-ही-मन गुरुदेव का मानसिक पूजन करे। फिर नहा-धोकर विधिवत् धूपबत्ती, प्राणायाम, गुरुगीता का पाठ आदि करके बाह्य पूजन धूपबत्ती या षोडशोपचार से भी कर सकते हैं और फिर मानसिक पूजन करिये। पूजन तब तक बार-बार करते रहें, जब तक आपका पूजन गुरु तक नहीं पहुँचा। पूजन पहुँचने का एहसास होगा, अष्टसात्त्विक भावों में से कोई-न-कोई भाव भगवत्कृपा से आपके हृदय में प्रकट होगा और जब कोई भाव प्रकट हो जाय अष्टभावों में से तो समझ लेना अब मानसिक पूजन, उपवास हमारा सफल हो गया। आप इस प्रकार गुरुपूर्णिमा का महोत्सव व्यावहारिक रूप के साथ ही आध्यात्मिक रूप से भी मना के इसका अनंत गुना फायदा लें - ऐसी मैं आपको सलाह देता हूँ, इससे आपको विशेष लाभ होगा।

पूज्य बापूजी के प्रेरक जीवन-प्रसंग

गुजरात के मेहसाणा जिले के लाडोल गाँव की कमला बहन पटेल सन् १९७८ से पूज्य बापूजी का सत्संग-सान्निध्य पाती रही हैं। उनके द्वारा बताये गये बापूजी के कुछ मधुमय प्रसंग :

दिमाग का कचरा नदी में डाल दो !

मैं ऊंझा में शासकीय शिक्षिका थी। मेरी सहेली बापूजी से दीक्षित थी। उसने मुझे आश्रम की एक पुस्तक दी। उसे पढ़कर मुझे बहुत शांति व आनंद मिला और बापूजी के दर्शन की इच्छा हुई। १९७८ में मैं पहली बार बापूजी का सत्संग सुनने अहमदाबाद आश्रम आयी। फिर तो ऐसा रंग लगा कि मैं हर रविवार को आने लगी और १९७९ के उत्तरायण शिविर में मुझे मंत्रदीक्षा लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन् १९८० के चेटीचंड शिविर में गाँव के कई लोगों के साथ मैं अपने पिताजी (पुरुषोत्तम पटेल) को भी लेकर मंत्रदीक्षा दिलाने के लिए अहमदाबाद आश्रम आयी थी।

लोगों ने बताया कि बापूजी सत्संग-मंडप में हैं तो हम लोग सीधे वहीं पहुँचे। उस समय सत्संग-मंडप में कूलर लगाने की व्यवस्था हो रही थी। बापूजी बाहर आये, सबको नजदीक से दर्शन देते हुए मेरे पिताजी के पास आये तो उनको कुछ तेज आवाज में बोले : ''काका ! दूर खिसको। तुम लोगों के लिए ही सब व्यवस्था हो रही है।''

बापूजी ने अपनी मौज में ऐसा कहा परंतु मेरे पिताजी को बुरा लग गया। मेरे पास आकर बोले : ''नदी में नहाने जाना है, तौलिया दो।''

दोपहर के दो-ढाई बजे थे, मैंने मना किया परंतु वे नहीं माने। मन-ही-मन मैंने प्रार्थना की : 'बापूजी ! मेरे पिताजी मंत्रदीक्षा के लिए आये हैं, कितने जन्मों के बाद यह घड़ी आयी है, इसलिए कृपा करना।'

करुणावत्सल गुरुदेव ने मेरी प्रार्थना सुन ली। नदी में स्नान करके पिताजी आये तो बहुत आनंद में थे। उन्होंने बताया कि ''बापूजी नदी में आये थे।''

हमने कहा : ''बापूजी तो इधर ही मंडप में थे, नदी में तो गये ही नहीं !''

''नहीं, बापूजी आये थे। मैं स्नान करने के लिए नदी में गया तो मेरे सामने बापूजी आ गये। बापूजी ने कहा कि ''तुम्हारे मगज (दिमाग) में जो कचरा भरा है, वह नदी में डाल दो !'' तो मैंने कहा : ''बापूजी ! मुझ पर दया करना।'' फिर पूज्यश्री वहाँ से चले आये।''

तो इस प्रकार से बापूजी भक्तों का भला करने के लिए क्या-क्या लीलाएँ करते हैं !

कैंसर को कर दिया कैंसल

सन् १९८५ में मेरे पिताजी के पैर में फोड़ा जैसा हुआ तो उन्होंने उपचार किया मगर ठीक नहीं हुआ। १५ दिनों में वह फोड़ा मोसम्बी जितना बड़ा हो गया तो अस्पताल में ऑपरेशन करवाया। फिर उनकी जाँच-रिपोर्ट को देखकर डॉक्टर ने कहा : ''दूसरे चरण (सेकंड स्टेज) का कैंसर है। पैर को कटवाना पड़ेगा।''

पिताजी तो निर्भय थे, उनको ऐसा था कि 'मुझे जो कुछ हुआ था, वह ऑपरेशन के साथ चला गया, अब मुझे कुछ नहीं होगा।' परंतु हम लोगों को चिंता थी। मैंने यह बात बापूजी को बतायी तो पूज्यश्री ने पूछा : ''उसका मन कैसा है ?''

''बापूजी ! वे तो पूरी तरह से निर्भय हैं।''

पूज्यश्री २-३ मिनट आँखें बंद करके शांत बैठे रहे, फिर एकदम बुलंद आवाज में बोले : ''वह निर्भय है तो उसे कुछ नहीं होगा।''

थोड़ी देर के बाद बोले : ''घाव के ऊपर स्वमूत्र से थोड़ी देर मालिश करने को बोलना।''

पिताजी को मैंने सारी बात बतायी तो वे एकदम गद्गद हो गये। फिर उन्होंने बड़ी श्रद्धा से गुरुदेव द्वारा बताया गया प्रयोग किया, जिससे घाव ठीक हो गया, साथ ही जो गड्ढा बड़ा हो गया था वह भी भरने लगा। परंतु २ महीने बाद तलवे के ऊपर दूसरा फोड़ा होने लगा, वह भी नींबू के बराबर हो गया तो मैंने बोला : ''बापूजी ने जो स्वमूत्र का प्रयोग बताया था उसे कीजिये।''

उन्होंने वैसा ही किया तो १५-२० दिन में वह भी ठीक हो गया। इस प्रकार बापूजी ने कैंसर को कैंसल कर दिया। इसके बाद वे १५ साल और जिये। १९८५ में ८३ साल की उम्र में कैंसर हुआ था और सन् २००० में ९८ साल की उम्र में उनका शरीर सामान्य ढंग से शांत हुआ।

जब कान की आवाज वापस आ गयी

जब पिताजी की ९० साल की उम्र होनेवाली थी तो उनको कम दिखाई देने लगा और सुनाई देना भी लगभग बंद-सा हो गया था। उसके पहले वे रोज सत्संग सुनते थे, उनका पक्का नियम था तो उन्होंने कहा : ''मुझे तो अब सत्संग भी नहीं मिलता।''

उनको दिखे भी नहीं और उनकी सेवा के लिए कुछ पूछना हो तो सुनाई भी न पड़े, बड़ी समस्या हो गयी थी। एक दिन मैंने बापूजी को यह बात बतायी तो पूज्यश्री ने दो सेवफल दिये और कहा : ''उनको खिला देना, सब ठीक हो जायेगा।''

सेवफल खिलाये तो ३-४ दिन में उनकी आवाज सुनने की संवेदना लौटी, कान में थोड़ी-थोड़ी सरसराहट होने लगी और ५-६ दिन में तो एकदम सब सुनाई देने लगा।

बापूजी ने बीड़ी की बुरी आदत छुड़ा दी

बापूजी एक बार लाडोल गाँव में आये तो मेरे पिताजी को जंगल घूमने साथ में ले गये। मेरे पिताजी बीड़ी पीते थे तो बापूजी ने पूछा : ''काका ! बीड़ी पीते हो ?''

पिताजी ने कहा : ''हाँ बापूजी !''

''अब बंद कर दो !''

''जी बापूजी ! अब नहीं पिऊँगा।''

बीड़ी बंद करने के कुछ दिनों बाद ठंड का समय था। खेत में जाते समय पिताजी २ बीड़ी साथ में लेकर गये। परंतु उनके मन में खटक थी कि 'बापूजी ने मना किया है फिर भी मैं बीड़ी पी रहा हूँ।' पीने के लिए जैसे ही मुँह पर बीड़ी रखी तो बापूजी के वचन गूँजने लगे, उन्हें बड़ी ग्लानि हुई और उन्होंने वह बीड़ी फेंक दी, साथ ही दूसरी भी फेंक दी। मन में विचार करने लगे कि 'आज तो मैं पुनः बीड़ी की लत में फँसने जा रहा था परंतु बापूजी की प्रेरणा से बच गया।' वे बापूजी के प्रति अहोभाव से भर गये और आँखों में आँसू भरकर बापूजी से मन-ही-मन प्रार्थना करने लगे : 'बापूजी ! मेरी बीड़ी छुड़ाने के लिए आपको कितना खयाल रखना पड़ा। और मैं कितना मूर्ख हूँ कि आज्ञापालन करने में इतना ढीला हो गया।'

फिर कभी भी उन्होंने बीड़ी नहीं पी और उसके बाद उनकी तबीयत भी बहुत अच्छी रही।

आनंदित-आह्लादित करती मधुमय लीला

हम पहली बार बापूजी के दर्शन करने आश्रम आये थे तो बापूजी ने कहा था कि ''हम तुम्हारे गाँव आयेंगे।'' बापूजी ने हमारे लाडोल गाँव में पहला सत्संग एक दिन का दिया था। दूसरी बार शिविर था तो पूज्यश्री ने आसपास के कई घरों में अपने श्रीचरण घुमाये। मेरे घर में पधारे तो पानी की मटकी उठाकर पानी छिड़कने लगे। बाद में मैंने लोटे में पानी दिया तो बापूजी ने अपने करकमलों से पानी छिड़का, सबको प्रसाद दिया और अपने श्रीचरणों से मेरे घर को पावन किया। फिर घर के बाहर एक स्कूटर खड़ा था तो बापूजी उस पर बैठ गये और जैसे कृष्ण भगवान गली-गली में घूमते थे, वैसे दो मुहल्लों में स्कूटर लेकर घूमने लगे। रास्ते में स्कूटर कहीं पर भी खड़ा कर देते और किसीके भी घर में बिना बुलाये पहुँच जाते। कोई बुलाये तो उनके घर नहीं जाते, उनको प्रसाद दे के दूसरे के घर चले जाते और उन्हें भी प्रसाद देते। बापूजी की इस लीला ने सारे मुहल्ले के लोगों को आनंदित व आह्लादित कर दिया।

पकवान के नहीं प्रेम के भूखे होते हैं महापुरुष

करसनभाई चौधरी, जो गुजरात सरकार में मंत्री थे, उनके गाँव में बापूजी सत्संग के लिए कई बार जाते थे। एक बार वहाँ गये तो जंगल में घूमने गये। वहाँ एक वृद्ध माताजी थीं, उनका बापूजी के प्रति बहुत प्रेम था परंतु वे बहुत गरीब थीं और झोंपड़ी में रहती थीं। वे बापूजी के पास नहीं आ सकीं तो बापूजी स्वयं उनकी झोंपड़ी में पहुँच गये।

वे माताजी पूज्यश्री को देखते ही चहक उठीं और ''बापू !... बापू !...'' करते हुए भावविभोर हो गयीं।

बापूजी ने कहा : ''माताजी ! मुझे खाने को दो।''

माताजी ने बाजरे की मोटी-मोटी रोटी और ग्वारफली की सब्जी बनायी थी। जैसे शबरी ने रामजी को बड़े प्रेम से जूठे बेर खिलाये थे, उसी प्रकार बड़े प्रेम व प्रसन्नता से उन्होंने बापूजी को बाजरे की रोटी और ग्वार की सब्जी दी। बापूजी को बोरे का आसन दिया, उनकी झोंपड़ी में और कुछ तो था नहीं। उनका प्रेम

शबरी जैसा था। बाजरे की रोटी और ग्वार की सब्जी खाकर बापूजी ने कहा : ''आज भोजन में बहुत आनंद आया, खाने के लिए इतना अच्छा मिला।'' माताजी की आँखों से प्रेमाश्रुओं की धार बहने लगी, वे गद्‌गद हो गयीं !

बाद में करसनभाई चौधरी पूज्यश्री के आगे रोने लगे। बापूजी ने पूछा : ''ऐसा क्यों करते हो ?''

''बापूजी ! हम आपके लिए घर से कितने टिफिन लाते हैं मगर आप कभी नहीं खाते और उन माताजी का आपने खाया तो हमारे प्यार में कमी होगी इसीलिए हमारा कभी नहीं लिया।''

''हम तो सभी जीवों का कल्याण चाहते हैं। वे तो माताजी थीं, दूसरे किसी जीव का भी यदि कल्याण होनेवाला हो तो वह हो जाता है, मैं कुछ नहीं करता।''

'ज्ञानप्रदाता गुरु का पूजन कौन नहीं करेगा !'
: भगवान सूर्य

जिनके जीवन में वैदिक ज्ञान, आत्मज्ञान देनेवाले संत-सद्‌गुरु नहीं हैं, जिन्हें ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों में श्रद्धा नहीं है वे तो कंगाल हैं। श्रद्धा जीवनरूपी पुष्प को सुविकसित करनेवाला श्रेष्ठ रसायन है। 'भविष्य पुराण' में भगवान सूर्य कहते है : ''श्रद्धानिष्ठ ही धर्म-प्रतिष्ठित होता है। वेद-मंत्रों के अर्थ अतीव गूढ़तम हैं। उनमें परमेश्वर अधिष्ठित हैं, अतः इन्हें श्रद्धा के आश्रय से ही ग्रहण किया जा सकता है। ये बाह्य चक्षु से नहीं देखे जाते। श्रद्धारहित देवता भी शरीर को भाँति-भाँति के कष्ट देने पर तथा अत्यधिक अर्थ-व्यय करने पर भी धर्म के सूक्ष्मरूप वेदमय परमात्मा को नहीं प्राप्त कर सकते हैं। श्रद्धा परम सूक्ष्म धर्म है, श्रद्धा यज्ञ है, श्रद्धा हवन, श्रद्धा तप, श्रद्धा ही स्वर्ग और मोक्ष है। यह सम्पूर्ण जगत श्रद्धामय ही है, अश्रद्धा से जीवन देने पर भी कुछ फल नहीं होता। बिना श्रद्धा के किया गया धर्म-कार्य सफल नहीं होता। अतः मानव को श्रद्धासम्पन्न होना चाहिए।

जो अज्ञान से संतप्त मनुष्य को (ब्रह्मज्ञान के सत्संग-अमृत से परितृप्त करके) शांत करते हैं, उनके समान गुरु कौन होगा ! जो भक्तों को ईश्वरीय ज्ञानरूपी अमृत से आप्लावित करते हैं, भला उनकी पूजा कौन नहीं करेगा !''

महान बनने की मधुमय युक्ति - पूज्य बापूजी

सुबह जब नींद खुले तो संकल्प करें कि 'आज का दिन तो आनंद में जायेगा। मुझे आत्मविद्या पानी है, योगविद्या सीखनी है।' खुद का नाम लेना। समझ लो मेरा नाम मोहन है। सवेरे उठकर खुद को कहना : 'मोहन !'

बोले : 'हाँ बापूजी !' मान लो कि बापूजी अपने साथ बात कर रहे हैं।

'तुझे क्या चाहिए ?'

'मुझे तो आत्मविद्या, योगविद्या और लौकिक विद्या - तीनों को पाना है।' शांति, आनंद... कुछ न करें। फिर संकल्प करें : 'ॐ... हरि ॐ ॐ ॐ... हरि ॐ... शक्ति, भक्ति, योग्यता... हरि ॐ... हरि ॐ... हरि ॐ...' फिर थोड़ा ध्यान करके हथेलियों को देखकर बिस्तर छोड़ें। इससे तीनों विद्याओं में प्रगति होगी।

शुभ संकल्पों के द्वारा रक्षा करनेवाला पर्व : रक्षाबंधन

रक्षाबंधन १८ अगस्त

ऋषि-पूजन का दिवस, यज्ञोपवीत पहनने व बदलने का दिवस, स्वाध्याय और आत्मिक शुद्धि के लिए अनुष्ठान करने या पूर्णाहुति करने का दिवस है रक्षाबंधन।

कैसी है भारतीय संस्कृति, ऋषियों की परम्परा का चलाया धागा ! अगर ईमानदारी से आप इसका फायदा उठाते हैं तो आज का जवान पड़ोस की बहन को बहन कहने की जो लायकी खो बैठा है, युवती पड़ोस के भाई को भाई कहने की लायकी खो बैठी है, वह लायकी फिर से विकसित हो सकती है, युवा पीढ़ी की रक्षा हो सकती है, ब्रह्मचर्य की रक्षा हो सकती है। आपके अंदर देश की रक्षा, अपने स्वास्थ्य की रक्षा करनेवाला ऋषि-ज्ञान नहीं है तो दूसरे लोग आकर आपको क्या ऊपर उठायेंगे ! कोई भी आकर ऊपर नहीं उठायेगा, जो आपके पास है उसको खींचने के लिए ही योजना बनायेगा। ऊपर तो आपको आपका आत्मा उठायेगा, आपकी संस्कृति उठायेगी, आपका धर्म और ब्रह्मवेत्ता संत उठायेंगे।

मेरे सद्गुरु को उनके शिष्यों ने राखी बाँधी थी। साधकों की यह कामना होती है कि 'हमारे गुरुदेव अधिक-से-अधिक हम जैसों को परमात्म-अमृत पिलायें और राखी बाँधकर हम अपनी रक्षा चाहते हैं। गुरुदेव ! व्यासपूर्णिमा का पूजन करने के बाद महीनाभर हो गया, संसार में हम गये हैं, चाहते हैं ध्यान करना लेकिन मन इधर-उधर चला जाता है। चाहते हैं आत्मसाक्षात्कार करना लेकिन संसार के विषय-विकार हमें खींच लेते हैं। चाहते हैं सबमें समता लेकिन विषय-विकार विषम कर देते हैं। इन विषय-विकाररूपी राक्षसों से हमारी रक्षा करना, संसाररूपी भोग से और जन्म-मरण के चक्कर से हमारी रक्षा करना।' - इस प्रकार की साधकों की भावना होती है, रक्षा चाहते हैं।

बहन भाई के द्वारा अपने धन-धान्य, सुख-समृद्धि व शील की रक्षा चाहती है, पड़ोस की बहन पड़ोस के भाई के द्वारा अपनी इज्जत और शील की रक्षा चाहती है। साधक अपने संतों के द्वारा अपनी साधना की रक्षा चाहते हैं। यह राखी मंगलकारी संकल्पों को अभिव्यक्त करने का एक प्रतीक है। मनुष्य संकल्पों का पुंज है।

समुद्र की उपमा दी है ज्ञानी को। यह दिवस समुद्र-पूजन का दिन है। समुद्रों का समुद्र जो परमात्मा है उसके पूजन का दिन है। व्यापारियों के लिए बाह्य समुद्र पूजने योग्य है और साधकों के लिए भीतर का समुद्र

पूजने योग्य है । व्यापारी लोग इस दिन समुद्र की पूजा करते हैं । आप लोग भगवान के आशिक हैं, आपकी आँखों में प्रभुप्रेम है, श्रद्धा है और संसाररूपी समुद्र को तय करने के लिए आपके पास छोटी-सी साधना की नौका है । 'ये ज्वार और भाटे आते रहते हैं । इनसे हमारी रक्षा होती रहे ।' - ऐसी सत्कामना साधकों की होती है और यह अच्छी भी है।

साधक का राखी बाँधने का भाव क्या ?

कई लोग चाहते हैं कि हमारा धन-धान्य, पुत्र-परिवार और बढ़े लेकिन साधक चाहता है कि मेरी जो ईश्वरीय मस्ती है, शांति है, एकाग्रता है, मेरा जो आत्मज्ञान का खजाना है, मौन है और मेरी जो ईश्वर के बारे में समझ है वह और बढ़े।

हमने कुंताजी से धागा नहीं बँधवाया है, कर्मावती या इन्द्राणी से धागा नहीं बँधवाया है, हमने साधक और साधिकाओं से धागा बँधवाया है । यह धागा बाँधना मतलब क्या ? ये धागे हमारे पास आ गये, साधक-साधिकाओं की दृष्टि मुझ पर पड़ी, मेरी दृष्टि उन पर पड़ी... तो सूक्ष्म जगत में स्थूलता का कम मूल्य होता है, यहाँ सूक्ष्म संकल्प एक-दूसरे की रक्षा करते हैं। जो देह में अहंबुद्धि करते हैं उनको धागे की याद चाहिए लेकिन जो ब्रह्म में या गुरु-तत्त्व में या आत्मा में अहंबुद्धि करते हैं उनको तो धागा देखनेभर को है, बाकी तो उनके संकल्प ही एक-दूसरे के लिए काफी हो जाते हैं।

राखी पूर्णिमा के दिन यज्ञ की भभूत शरीर को लगायें, मृत्तिका (मिट्टी) लगाकर स्नान करें, फिर गाय का गोबर लगा के स्नान करें। यह कितने ही दोषों एवं चर्मरोगों को खींच लेगा। इससे शारीरिक शुद्धि हो गयी। पंचगव्य पीने का दिन राखी पूनम है । और दिनों में भी पिया जाता है लेकिन इस दिन इसका कुछ विशेष महत्त्व है।

पर्व का आध्यात्मिक रूप

आध्यात्मिक ढंग से इस पर्व के दिन गौतम ऋषि, अरुंधती माँ को याद करके, वसिष्ठजी, विश्वामित्रजी आदि सप्तऋषियों को याद करके ब्राह्मण लोग गाँव की उत्तर दिशा में नदी, तालाब या सागर के किनारे बैठकर जनेऊ बदलते हैं। पुराना जनेऊ सरिता में, सागर में बहा देते हैं और नया जनेऊ धारण करते हैं। जनेऊ बदलवाकर यह पर्व हमें अपने पूर्वजों की स्मृति कराता है कि आपके पूर्वज कितने महान थे और उनकी तरह आप भी छोटी-छोटी उपलब्धियों में रुकिये मत। रक्षाबंधन महोत्सव आपके आत्मा की जागृति का संदेश देता है। मंत्रोच्चार में, वेदपाठ में अथवा सत्कर्म करने में जो गलतियाँ हो गयी हों, उनका प्रायश्चित करके अपनी आध्यात्मिकता को उज्ज्वल करने का संकल्प करते हैं इस दिन।

बाल-वैरागी मधुसूदन का अद्भुत सामर्थ्य !

अगर मनुष्य का विवेक-वैराग्य जाग उठे और वह तत्परता से लग पड़े तो छोटी-सी उम्र में भी आत्मज्ञान की परम उपलब्धि प्राप्त कर सकता है। जरूरत है तो बस, दृढ़ निश्चय और अथक पुरुषार्थ की।

एक महापुरुष थे श्री मधुसूदन सरस्वती। जब वे १० वर्ष के थे तब एक बार अपने प्रकांड पंडित पिता के साथ नाव में बैठकर राजा के पास गये। उनके पिता ने राजा से कहा : ''हर साल बड़े आग्रह के साथ आप मुझे बुलाते हैं और आप मेरे द्वारा शास्त्रीय वचन, कविता एवं सद्ग्रंथ सुनकर पावन होते हैं किंतु राजन् ! अब मैं वृद्ध हो गया हूँ। अब मुझसे भी उत्तम कविता मेरा यह बालक आपको सुनायेगा। यह बालक है तो १० साल का परंतु इसके हृदय में माँ सरस्वती का वास है। इसकी वाणी शास्त्र-रस से सुसज्ज है।''

इस प्रकार पिता ने जब मधुसूदन की प्रशंसा की तब राजा ने कहा : ''आप लोगों को मुसाफिरी की थकान होगी। अतः आराम करें। हम सुबह फिर मिलेंगे।''

दूसरा दिन हुआ लेकिन राजा से उनकी मुलाकात न हुई। तीसरा दिन, चौथा दिन बीता। अंत में मुश्किल से फिर वही बात राजा के समक्ष छेड़ दी गयी। तब राजाज्ञा से राजदरबार में मधुसूदन ने कुछ चौपाइयाँ, श्लोक, काव्य-रचनादि सुनाये। किंतु राजा का मन किसी और ही जगह पर व्यस्त था। राज्य की सीमाएँ किसी और राजा द्वारा खतरे में पड़ी हुई थीं, राजा को उसकी चिंता हो रही थी।

जब मन में भय एवं चिंता होती है, तब बाहर के पदों में रस नहीं आता। राजा ने बिना हृदय के सुनकर पुरस्कार दे के विदा किया। पंडित को भारी दुःख हुआ कि 'राजा के विशेष आग्रह के वश हम इतने दूर से आये थे, फिर भी राजा ने हमारे ऊपर न कुछ ध्यान दिया, न ही वे खुश हुए।' पिता-पुत्र नाव में बैठकर रवाना हुए। पिता उदासीन-से बैठे थे। इतने में विचारमग्न मधुसूदन ने एकाएक कुछ दृढ़ निश्चय किया और पिता से कहने लगे : ''पिताजी ! एक राजा को रिझाने के लिए हम कितने महीनों से तैयारी कर रहे थे और उन्हें तो हमारी कोई कद्र भी न थी। ऐसे मरणधर्मा मनुष्यों को रिझाते-रिझाते आपने पूरी जिंदगी बिगाड़ दी। अंत में क्या मिला ? आपकी नाईं काव्य-पद सुनाते-सुनाते ऐसे ही मुझे भी प्रकांड पंडित का पद मिलेगा, मान-प्रतिष्ठा मिलेगी। फिर उस प्रतिष्ठा को सँभालने में, अहंकार को पोसने में तथा पत्नी और बाल-बच्चों की देखभाल करने में ही मेरा जीवन खत्म हो जायेगा। जिसने आत्मा को नहीं पहचाना है, ऐसों की खुशामद में ही मेरी आयु नष्ट हो जायेगी। आयु पूरी हो जाय उसके पहले मैं आपसे संन्यास-दीक्षा की आज्ञा चाहता हूँ।''

''बेटा ! तू अभी छोटा है। थोड़ा अभ्यास करके विद्वान बन, संसार के भोगों को भोग, उसके पश्चात् वृद्धावस्था में संन्यास लेना।''

''पिताजी ! मैंने आपसे ही शास्त्रों की बात सुनी है कि

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः ।।

नित्यं संनिहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसंग्रहः।

(गरुड़ पुराण, धर्म कांड - प्रेत कल्प : ४७.२४-२५)

यह शरीर अनित्य है, धन-वैभव शाश्वत नहीं हैं और एक-एक दिन करके रोज मृत्यु नजदीक आ रही है। इस नाशवान शरीर का कोई भरोसा नहीं है इसलिए धर्म का संग्रह कर लेना चाहिए। पिताजी ! मिट्टी के घड़े का भी भरोसा होता है कि छः महीने तक रहेगा परंतु इस शरीर का भरोसा नहीं है। अतः जितना हो सके उतना जल्दी समय का सदुपयोग कर लेना चाहिए।''

''ठीक है पुत्र ! मैं तो अनुमति देता हूँ किंतु मेरी आज्ञा पर्याप्त नहीं है। तुझ पर तेरी माँ का भी अधिकार है, इसलिए घर चलकर अपनी माँ से भी अनुमति ले ले।''

मधुसूदन घर जा के माता के चरणों में प्रणाम करके बोला : ''माँ ! मैंने आज तक तुमसे कुछ नहीं माँगा लेकिन आज कुछ माँगना चाहता हूँ।''

''वत्स ! तू जो माँगेगा, वह मिलेगा।''

''माँ ! मुझे वचन दे।''

''हाँ पुत्र ! तू जो माँगेगा वह मैं दूँगी, जरूर दूँगी।''

''माँ ! तुम कल्याणकारिणी हो ! मैं तुमसे और कुछ तो नहीं माँगता, सिर्फ मुझे संन्यास लेने की अनुमति दे दो।''

इतना सुनते ही माँ पर मानो वज्राघात हुआ। आनंद और हर्ष का वातावरण अचानक आक्रंद में बदल गया। मधुसूदन आश्वासन देते हैं, शास्त्रों का ज्ञान सुनाते हैं : ''माँ ! तुम कहती थी न कि पुत्र ऐसा होना चाहिए जो अपना और अपने कुल का उद्धार करे। मेरा संन्यास लेना कल्याणकारी सिद्ध होगा। माँ ! तुम वचन दे चुकी हो। अचानक पुत्र की मौत हो जाय तब भी माँ दिल पर पत्थर रखकर जी लेती है। कोई पुत्र जवानी में ही आवारा बन जाता है, कोई पुत्र शादी के बाद पत्नी को लेकर माँ-बाप से अलग हो जाता है और कभी पुत्र का जन्म होते ही उसकी मृत्यु हो जाती है तब भी माता अपने मन को मना लेती है। जबकि मैं तो १० साल तुम्हारे चरणों में रहा हूँ और अब दूर जा भी रहा हूँ तो सत्य को, परमात्मा को पाने के लिए।

पिताजी ने जिंदगीभर राजाओं को रिझाया लेकिन अंत में क्या ? कभी वे खुश हुए तो कभी नाराज हुए। इससे तो वे अपने जीवनदाता प्रभु को रिझाने में समय-शक्ति का खर्च करते तो निहाल हो जाते। इसलिए हे माँ ! तुम मुझे संन्यास लेकर अपने परमेश्वर को पाने की अनुमति प्रदान कर दो।''

माँ के पास अब कहने के लिए कुछ बाकी न रहा था, फिर भी वह बोली : ''ठीक है बेटा ! मनुष्य-जन्म प्रभुप्राप्ति के लिए हुआ है। अतः मैं तुम्हारे मार्ग में रुकावट नहीं बनूँगी परंतु बेटा ! अभी तुम छोटे हो।''

''जो मनुष्य छोटी-छोटी चीजें इकट्ठी करने के लिए तड़पता है वह बड़ी उम्र होते हुए भी छोटा होता है और जो छोटा होते हुए भी बड़े-में-बड़े आत्मदेव को पाने के लिए तड़पता है वह फिर छोटा नहीं कहलाता, बड़ा हो जाता है।''

माँ निरुत्तर हो गयी और अंत में मधुसूदन को अनुमति दे ही दी : ''जा बेटा ! तेरा कल्याण हो...।''

माता-पिता के आशीर्वाद ले के बालक मधुसूदन संन्यास लेने के लिए घर का त्याग कर निकल पड़ा। पिता ने सिखाया था कि पहले विद्याभ्यास करके सार-असार का ज्ञान पाकर फिर किसी ब्रह्मवेत्ता महापुरुष की शरण में जाना। मधुसूदन ने ऐसा ही किया।

एक बार मधुसूदन चलते-चलते यमुना के किनारे आये और वहाँ ध्यानमग्न हो गये। उनका चित्त निर्दोष था। बाहर के कुसंस्कारों का प्रभाव उन पर नहीं पड़ा था। शरीर में ब्रह्मचर्य की शक्ति थी। दृढ़ वैराग्य पनपा हुआ था। अतः सहज में ही वे ध्यानमग्न होने लगे और उनका भीतरी आनंद और रस प्रकट होने लगा।

एक बार अकबर की बेगम को पेट में दर्द होने लगा। उसने कई इलाज करवाये फिर भी कोई दवाई काम न आयी। एक दिन रात को उसको स्वप्न आया। उसने देखा कि 'एक बालयोगी यमुना किनारे तप कर रहा है। उसको स्पर्श करके जो हवा आती है वह दर्द दूर कर रही है। उस बालयोगी ने उसको आशीर्वाद दिये। फिर वह अच्छी हो गयी।' प्रभातकाल का स्वप्न अक्सर सच्चा होता है। सुबह उठकर बेगम ने अकबर को अपने स्वप्न की बात बतायी और वहाँ जाने के लिए कहा। अकबर ने पहले गुप्तचर भेजकर जाँच करवायी कि 'सचमुच में यमुना-किनारे कोई बालयोगी तपश्चर्या कर रहे हैं कि नहीं ?'

गुप्तचर द्वारा जानने को मिला कि वास्तव में यमुना-किनारे १० वर्ष के एक बालयोगी ध्यानमग्न बैठे हैं।

अकबर और बेगम गुप्त वेश में बालयोगी के पास गये। बेगम ने प्रार्थना की : ''महाराज ! हम दीन-दुःखी आपकी शरण में आये हैं। मेरे पेट में बहुत दर्द हो रहा है। बड़े दूर से हम आशा लेकर आपके पास आये हैं।''

बालयोगी मधुसूदन ने आँखें खोलीं और बोले : ''जो जगन्नियंता परमात्मा है, जो सबके हृदय में बस रहा है, उसको याद करोगे तो सब दुःख दूर हो जायेंगे। तुम भी भगवान की कृपा से ठीक हो जाओगी।''

बालयोगी की दृष्टि से ही आधा दर्द तो दूर हो गया था और आधा दर्द महल पहुँचते ही समाप्त हो गया। दूसरे ही दिन अकबर बादशाह हीरे-जवाहरात एवं सुवर्ण मुद्राएँ लेकर बालयोगी मधुसूदन के पास हाजिर हो गया और बोला : ''महाराज ! यह भेंट स्वीकार करने की कृपा कीजिये। कल हम कपट-वेश में आये थे। मैं बादशाह अकबर और वह मेरी बेगम थी। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?''

जब मनुष्य परमात्म-ध्यान में मस्त हो जाता है, परब्रह्म-परमात्मा में बुद्धि स्थिर हो जाती है तब उसे ऐहिक वस्तुओं में रस नहीं रहता। आत्मरस चख लेनेवाले योगी को फिर सोना, हीरा, जवाहरात या इन्द्रिय भोग-विलास आकर्षित नहीं कर सकते। जिनके चित्त में प्रबल वैराग्य की ज्वाला और परमात्मप्राप्ति की तड़प थी ऐसे १० वर्ष के बालयोगी मधुसूदन ने बादशाह अकबर को उत्तर दिया : ''मेरा कोई मठ या पंथ नहीं है कि मैं हीरे-जवाहरात सँभालूँ। मुझे जो सँभालना चाहिए वह मुझे सँभालने दो और यदि आपको मेरे प्रति श्रद्धा है और कुछ देना ही चाहते हो तो इन चीजों का उपयोग साधु-संतों की सेवा में करना, धार्मिक लोगों को राज्य की ओर से सुविधा देना। आप इतना करोगे तो मुझे लगेगा कि मेरी सेवा हो गयी।''

मधुसूदन की वाणी सुनकर अकबर उनसे और भी अधिक प्रभावित हो गया। उनको प्रणाम करके लौटा। वे ही मधुसूदन आगे चलकर बड़े महान संत हुए व श्रीमद्भगवद्गीता पर उन्होंने टीका लिखी। वही मधुसूदनी टीकावाली भगवद्गीता अभी भी भारत के लाखों-लाखों घरों में मिलेगी।

जगत की सत्यता जितनी दृढ़ होती है, वृत्ति जितनी बहिर्मुख होती है और 'मेरे-तेरे' के विचार जितने आते हैं, उतनी शक्ति बिखरती है। उम्र के साथ ज्ञान का कोई संबंध नहीं है। जब बुद्धि परब्रह्म-परमात्मा में प्रतिष्ठित हो जाती है तब चित्त में अद्भुत शांति और सामर्थ्य प्रकट होने लगता है। फिर तो जिस पर भी ऐसे महापुरुष की नजर पड़ जाती है वह निहाल हो जाता है। इतना ही नहीं, उनको छूकर जो हवा बहती है, वह भी सुख और शांति की खबरें देने लगती है।

पहचानें महान सत्‌शिष्यों को
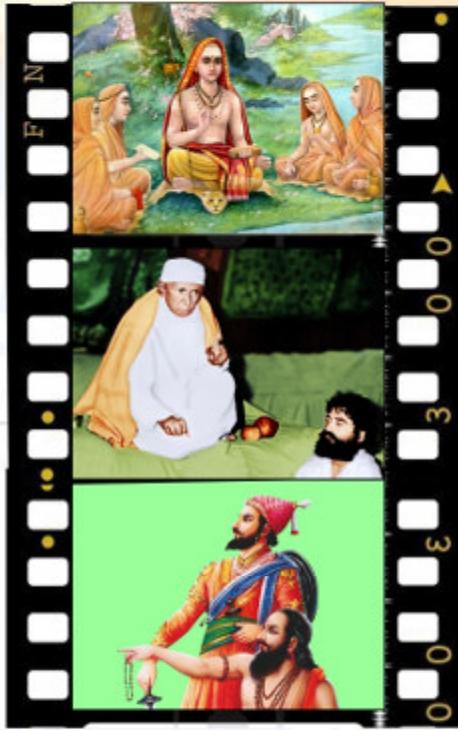
तो	मी	न	म	छ	त्र	प	ति	शि	वा	जी	ल
ट	पू	कुं	च	ई	रं	सं	झ	स	न	तु	म
का	श	र	ह्म	स	ट	त	द्	क	रु	थ	ह
चा	साँ	ह	ण	त्रि	क्षा	श्री	मि	रु	अ	श	र्षि
र्य	ई	श	माँ	पो	दा	आ	नि	ला	ष्ठ	ता	द
ए	श्री	बा	पु	म	ड़ा	शा	दा	र्णि	रे	ग	या
र	ली	उ	आ	पा	ली	रा	र	मा	त	पा	नं
ई	ला	द्रो	रु	त	सं	म	डा	ज	क	गु	दं
सं	शा	श्री	आ	शा	ला	जी	बा	र	ज	पा	ड
ज	ह	ड़	प	गा	उ	बा	ग	श	र	ब	षि
ल	जी	अ	फ	द्य	ऊ	पू	रा	इ	र्य	ओ	जी
श्री	म	द्	आ	द्य	शं	क	रा	चा	र्य	जी	र

नीचे दिये गये प्रश्नों के आधार पर वर्ग-पहेली में से सत्‌शिष्यों के नाम खोजिये।

(१) श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी का वह कौन-सा सत्‌शिष्य था जो गुरु की निजी सेवा करते-करते ही आत्मज्ञान को प्राप्त हो गया था ?

(२) वह कौन था, जो अपने प्रिय खाद्य पदार्थ के कारण अपना वास्तविक नाम खो चुका था पर गुरु में अटूट श्रद्धा-भक्ति के प्रभाव से उसने अपने गुरु के 'भावार्थ रामायण' ग्रंथ को पूर्ण किया ?

(३) किसने गुरुआज्ञा शिरोधार्य कर अपने गुरुदेव को प्रसन्न करने के लिए बारह साल तक अकेले ही अपने हाथों से मकान बनाये थे ?

(४) वह कौन था जो विवाह करने जा रहा था और मार्ग में मिले एक संत के दो अमृतवचन सुनकर बारातियों को लौटा दिया एवं उनका शिष्यत्व प्राप्त कर आजीवन दुल्हे के वेश में रहा ?

(५) कौन अपने सद्‌गुरु की पीड़ा दूर करने के लिए शेरनी का दूध दोहकर ले आया था ?

(६) वह कौन सत्‌शिष्य था, जिसकी ब्रह्मज्ञानप्राप्ति की प्रबल जिज्ञासा से श्री गोविंदपादाचार्यजी की अनेक वर्षों की समाधि छूटी और बाद में जिसने जगत में अद्वैत-वेदांत का प्रचार किया ?

(७) ''जो गुरु की आज्ञा दृढ़ता से मानता है, प्रकृति उसकी आज्ञा मानती है।'' किन सत्‌शिष्य की सेवा से प्रसन्न होकर उनके सद्‌गुरु ने यह आशीर्वाद दिया था ?

(८) रास्ते में सोये हुए (मृत) बालक को देखकर स्वामी केशवानंदजी के किन सत्‌शिष्य के श्रीमुख से एकाएक निकल पड़ा : ''बेटा ! बेटा ! उठ... उठ...।'' और वह मृतक बालक तुरंत उठ खड़ा हुआ ?

ऐसे महान बुद्धिमानों की संतानें गुरुकुल में रहती हैं

- पूज्य बापूजी

एक बार शहर के किसी विद्यालय के प्रधानाचार्य विद्यार्थियों को लेकर जंगल के एकांत गुरुकुल में गये। शहर के विद्यार्थियों ने देखा कि 'बेचारे गुरुकुल के विद्यार्थी धरती पर सोते हैं, गायें चराते हैं, गायें दोहते हैं और गोबर के कंडे सुखाते हैं, लकड़ियाँ इकट्ठी करने जाते हैं...।' उन बच्चों ने कहा : ''प्रधानाचार्यजी ! ये गरीबों, कंगालों के बच्चे हैं, लाचारों के बच्चे हैं जो गुरुकुल में पड़े हैं बेचारे !''

आचार्य ने कहा : ''ऐसा नहीं है। चलो, गुरुकुल के गुरुजी से मिलते हैं।''

बातचीत करते-करते प्रधानाचार्य और गुरुकुल के गुरुजी ने निर्णय किया कि गुरुकुल के विद्यार्थी और शहरी विद्यालय के विद्यार्थी आपस में चर्चा करें, विचार-विमर्श करें। चर्चा करते-करते शहर के विद्यार्थियों ने देखा कि 'ये हर तरह से हमारे से आगे हैं। शरीर हमारे से सुदृढ़ हैं और शिष्टाचार, नम्रता में और दूसरे को मान देकर आप अमानी रहने में रामजी का गुण इनमें ज्यादा है। शारीरिक संगठन मजबूत है, बौद्धिक क्षमताएँ भी तगड़ी हैं, स्मरणशक्ति भी गजब की है तथा व्याख्यान पर अपना अधिकार भी है और इतना होने पर भी निरभिमानिता का बड़ा सद्‌गुण भी इनमें है। हर तरह से ये हमारे से बहुत आगे हैं।'

शहर के विद्यार्थियों ने कहा : ''कंगाल और गरीबों के बच्चे इतने आगे कैसे ?''

शहर के विद्यार्थी

प्रधानाचार्य ने कहा : ''ये गरीबों और कंगालों के बच्चे नहीं हैं। ये दूरदर्शियों के बच्चे हैं, बुद्धिमानों, धनवानों के भी बच्चे हैं। वे दूरदर्शी जानते हैं कि विद्यार्थी-जीवन में विलासिता और सुविधाओं की भरमार देंगे तो बच्चे खोखले हो जायेंगे, विघ्न-बाधा और कष्टों में विद्याध्ययन करेंगे तो लड़के मजबूत होंगे, ऐसे महान बुद्धिमानों की संतान हैं जो गुरुकुल में रहते हैं।''

गुरुकुल के विद्यार्थी

सत्त्वगुण का विकास जीवन में लाये ज्ञान-प्रकाश

- पूज्य बापूजी

(गतांक का शेष)

रजोगुणी का कैसा स्वभाव होता है ?

रजोगुणी जरा-जरा बात में सुखी-दुःखी होगा और सुख के लिए भटकेगा। अपनी पत्नी, अपना पति होते हुए भी इधर-उधर बुरी नजर करेगा। रजोगुण है तो निर्दयता रहेगी और सोचेगा, 'जो कुछ मिला है वह बढ़ाओ, थामो...' सो असम्भव है। उसमें त्याग का अभाव और आसक्ति रहेगी। निंदा करने-सुनने में मजा आयेगा। झगड़ालू स्वभाव होगा, अहंकारी होगा। मान की वासना से काम करेगा और जब तक मान मिला तो ठीक, मान नहीं मिला तो अच्छा काम छोड़कर खिसक जायेगा। लेकिन सत्त्वगुणी व्यक्ति मान मिले चाहे अपमान मिले, अच्छे काम में लगा रहेगा। रजोगुणी किसीका सत्कार नहीं करेगा, अपना सत्कार चाहेगा। नम्रता नहीं रखेगा, दूसरों को नमायेगा, वह प्रायः ऐसा होता है। जिस किसीसे वैर बाँध लेगा। संताप से तपता रहेगा। कहीं मिल गयी परधन हड़पने की कोई खिड़की तो उधर घुस जायेगा। 'ये अलग हैं, ये ऐसे हैं, ऐसे हैं...' - इस प्रकार की द्वैतबुद्धि और निर्लज्जता, कुटिलता, कठोरता के दुर्गुण उसमें रहेंगे। कामविकार, मद, दर्प, द्वेष रजोगुणी में रहेगा।

तमोगुणी का कैसा स्वभाव होता है ?

अगर कोई बासी खाता है, शराब पीता है, प्याज, लहसुन अधिक खाता है, शुद्धि-अशुद्धि नहीं मानता है तो उसका तमोगुण बढ़ जाता है। तमोगुणी आदमी लोलुप होकर तामसी चीजें खाने की रुचि करेगा। भोजन से संतुष्ट नहीं होगा, खाने के बाद भी चर-चर करेगा (चरता रहेगा)। खड़े-खड़े खायेगा, पियेगा। मांस-मदिरा... ये उसके लिए कोई अशुद्ध नहीं, सब चलेगा। पीने योग्य वस्तु न हो तब भी वह पियेगा। भाँग, दारू पी लेगा, मसाला, तम्बाकू आदि चूसता-चबाता रहेगा। दिन को सोयेगा, रात को करवटें बदलेगा और मोटा-मोटा, भारी-भारी होकर रहेगा। अधिक बड़बड़ भी कर लेगा। जो काम जिस वक्त करना है, वह नहीं करेगा, 'फिर देखेंगे...।' वह काम को बिगाड़ देगा, प्रमादी होगा। हलके नाच-गान में उसे प्रेम रहेगा। धार्मिक लोगों को देखकर मजाक उड़ायेगा कि 'ये लोग काहे को बैठे हैं ? इससे तो आ जाते जरा क्लब में, सिगरेट पीते। मंदिरों, सेवा-पूजा में क्या रखा है ?' तमोगुणवाले की बुद्धि ऐसी मारी जाती है।

हो सकता है कि आप सत्त्वगुणी हैं और आपका भाई, बेटा या स्नेही तमोगुणी हो तो आपके और उसके स्वभाव में दिन-रात का अंतर रहेगा। आप रजोगुणी हैं और वह सत्त्वगुणी है तो भी फर्क रहेगा। सात्त्विक व्यक्ति देवपुरुष हो जाता है।

कैसा होता है गुणातीत ब्रह्मज्ञानी ?

चौथा पुरुष होता है महान आत्मा। वह सात्त्विक रहता है, भगवान का सुमिरन स्वयं भी करता है, औरों को भी कराता है। संसार को सपना जानता है, चैतन्य को अपना मानता है। वह तो मनुष्य-शरीर में सत्त्व, रज, तम - तीनों गुणों का उपयोग करके गुणातीत ब्रह्मज्ञानी हो जाता है।

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

गुरुआज्ञा हि केवलम्...
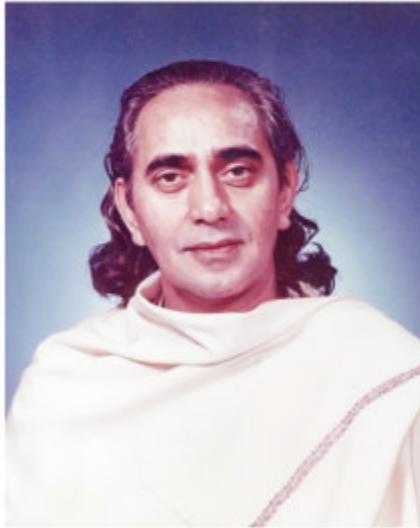
स्वामी राम (जिनका देहरादून में आश्रम है) के गुरु बड़े उच्च कोटि के संत थे । कई विद्यार्थी उनके पास आये और अपने को उनका शिष्य बनाने की प्रार्थना की ।

एक बार जब गुरु दक्षिण भारत में तुंगभद्रा नदी के तट पर निवास कर रहे थे तो एक दिन उन्होंने सभी विद्यार्थियों को बुलाकर कहा : ''सब लोग मेरे साथ चलो ।''

वे सबको नदी-तट तक ले गये । नदी भयंकर बाढ़ के कारण अत्यंत विस्तृत तथा भयावह लग रही थी । उन्होंने कहा : ''जो भी इस नदी को पार करेगा वही मेरा शिष्य होगा ।''

एक विद्यार्थी बोला : ''गुरुजी ! आप तो जानते हैं कि मैं पार कर सकता हूँ किंतु मुझे शीघ्र ही लौटकर अपना काम पूरा करना है ।''

दूसरा बोला : ''गुरुजी ! मैं तो तैरना ही नहीं जानता ।''

गुरुदेव के बोलते ही स्वामी राम अचानक नदी में कूद पड़े । नदी बहुत चौड़ी थी । उसमें अनेक घड़ियाल थे और कई लकड़ियाँ बह रही थीं लेकिन स्वामी राम को उनका कुछ भी ध्यान नहीं रहा । घड़ियाल को देख के वे भयभीत नहीं हुए और लकड़ियाँ देखकर यह नहीं सोचा कि 'लकड़ी का सहारा लेकर पार हो जाऊँ ।' उनका मन तो गुरुदेव के कथन पर ही एकाग्र था । जब वे तैरते-तैरते थक जाते तो बहने लगते परंतु पुनः तैरने का प्रयास करते । इस प्रकार वे नदी को पार करने में सफल हो गये ।

गुरुदेव ने अन्य विद्यार्थियों को कहा : ''इसने यह नहीं कहा कि मैं आपका शिष्य हूँ बल्कि आज्ञा सुनते ही बिना कुछ विचार किये कूद पड़ा ।''

गुरु के प्रति श्रद्धा आत्मज्ञान-प्राप्ति में सबसे ज्यादा आवश्यक है । बिना श्रद्धा के किसी एक अंश तक बौद्धिक ज्ञान तो प्राप्त किया जा सकता है किंतु आत्मा के निगूढ़तम रहस्य का उद्घाटन तो श्रद्धा के द्वारा ही सम्भव है । शिष्य तो अनेक होते हैं किंतु जो अपने जीवनरूपी पौधे को गुरुआज्ञा-पालनरूपी जल से सींचते हैं, उनके ही हृदय में आत्मज्ञानरूपी फल लगते हैं, वे ही सच्चे शिष्य हैं ।

अनोखी गुरुदक्षिणा

पन्द्रह वर्ष की आयु में जब स्वामी राम को उनके गुरु ने दीक्षा दी तो गुरुदक्षिणा के रूप में देने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं था । उन्होंने सोचा, 'दूसरे शिष्य डलिया भर के फल, पुष्प, रुपये लेकर आते हैं और अपने गुरु को समर्पित करते हैं पर मेरे पास तो गुरुजी को समर्पित करने के लिए कुछ भी नहीं है ।'

उन्होंने गुरुदेव से पूछा : ''आपको समर्पित करने के लिए सबसे अच्छी चीज क्या है ?''

''मुझे कुछ सूखी लकड़ी के टुकड़े लाकर दो ।''

उन्होंने सोचा, 'यदि कोई सूखी लकड़ी के टुकड़े गुरुदेव को भेंट करे तो वे रुष्ट होंगे ।' किंतु गुरुजी ने जैसा कहा उन्होंने वैसा ही किया ।

गुरुदेव बोले : ''अपने विशुद्ध चित्त से इन लकड़ी के टुकड़ों को मुझे समर्पित करो ।''

स्वामी राम को असमंजस में देख गुरुजी ने समझाया : ''जब तुम सूखी लकड़ी के टुकड़ों का ढेर समर्पित करते हो तो गुरु समझते हैं कि अब तुम मोक्ष-मार्ग के पथिक बनने को प्रस्तुत हो गये हो । (शेष पृष्ठ ३४ पर)

घोर शराबी से बना समाजसेवक

मैं एक आदिवासी परिवार का युवक हूँ। पहले मैं एक घोर शराबी था। शराब के नशे में घरवालों तथा गाँववालों के साथ झगड़े और मारपीट करना मेरी दिनचर्या बन गया था। शराब पीकर यहाँ-वहाँ पड़ा रहता था। मेरा जीवन नरक था, घरवाले भी बहुत परेशान थे। मैंने हजारों कोशिशें कीं, परिवारवालों ने सैकड़ों मन्नतें मानीं, अनेकों जगह सिर झुकाया मगर नशे की लत नहीं छूटी। एक दिन बापूजी के एक साधक ने मुझे 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका पढ़ने को दी। उसे पढ़कर जैसे मेरी अंतरात्मा जाग उठी, मन में ठान लिया कि 'जिन महापुरुष की वाणी इतनी ज्ञानमयी है, उनके दर्शन जरूर करूँगा।'

मैंने २००२ के उत्तरायण पर अहमदाबाद में पूज्य बापूजी के दर्शन किये तथा मंत्रदीक्षा ली। इससे बड़ा आत्मिक आनंद मिला। ऐसा अनुभव हुआ मानो अंतरात्मा बोल रही हो कि 'अब तेरी शराब की लत छूट जायेगी।'

दो दिन तक सत्संग सुना। उसके बाद तो बापूजी की कृपा से मेरा पूरा जीवन ही बदल गया। बस, मैंने निश्चय कर लिया कि 'मैं ऋषि प्रसाद की सेवा करूँगा और साथ ही योग का प्रचार-प्रसार करूँगा।' आज १४ साल हो गये, मैं निरंतर आदिवासी क्षेत्र में घूम-घूमकर बच्चों को योगासन आदि सिखाने की सेवा कर रहा हूँ। इससे अनेक आदिवासी बच्चों व युवकों का बहुत भला हो रहा है। मैं मरते दम तक बापूजी एवं 'ऋषि प्रसाद' का दैवी कार्य करता रहूँगा। नासमझ लोग चाहे कुछ भी बोलें, मैं बापूजी की भक्ति नहीं छोड़ूँगा!

- पुसऊराम उइके
पिनकापार, जि. राजनांदगाँव (छ.ग.)
सचल दूरभाष : ०९५७५८७५५२६

भक्तों की रखते हैं लाज

मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे इस घोर कलियुग में भी पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा पाने व उनकी सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मेरा पूरा परिवार पूज्यश्री से दीक्षित है।

दिसम्बर २०१५ में हमने खेत में ट्यूब वेल खुदवाने का निश्चय किया। उस जगह श्री आशारामायण एवं श्री गुरुगीता का पाठ करना शुरू कर दिया। प्रार्थना की कि 'हे गुरुदेव ! मेरे ट्यूब वेल से खूब पानी निकले।'

हमारे आसपास के खेतों में लोगों के ८०-९० फीट गहरे ट्यूब वेल में पानी था लेकिन हमारी बोरिंग १९० फीट पहुँच गयी पर थोड़ा भी पानी नहीं आया। मैं चिंतित हो गयी। श्री आशारामायणजी को हाथ में लेकर गुरुदेव के श्रीचित्र पर त्राटक करके प्रार्थना करने लगी : 'हे गुरुदेव ! मेरी लाज रखिये। मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिये, अन्यथा निंदक लोग हँसी उड़ायेंगे और न जाने क्या-क्या बोलेंगे। मुझे सेवा भी नहीं करने देंगे।' तभी मुझे श्रीचित्र से आवाज आयी : 'बारह बार ॐ-ॐ बोल।' गुरुदेव की वाणी सुनकर मैं गद्गद हो गयी और हृदय से केवल एक ही बार ॐ बोला। इधर ॐ बोला और उधर ट्यूब वेल से पानी की धार जोर से फूट पड़ी। उसे देख वहाँ उपस्थित सभी लोग चकित होकर सद्गुरुदेव की जय-जयकार करने लगे। मैंने आज्ञानुसार १२ बार ॐ का जप किया, खेत में चारों तरफ पानी-ही-पानी हो गया था। मैं गुरुदेव की करुणा-कृपा का प्रत्यक्ष अनुभव करके अपने आँसू रोक न पायी। कितने दयालु हैं मेरे बापूजी, जो अपने भक्तों की हर प्रार्थना सुनते हैं, पूरी करते हैं! भक्तवत्सल बापूजी को कोटिशः नमन!

- सविता देशमुख
लखमापुर, जि. नासिक (महा.)
सचल दूरभाष : ०९६८९२१४७०१

बिना कुछ लिये अनमोल खजाना देते हैं बापूजी

बिना कुछ लिये अनमोल खजाना देते हैं बापूजी

मैं १९९७ से 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की सेवा में जुड़ा हूँ। मुझे इसकी सेवा से अनेक लौकिक-अलौकिक लाभ हुए हैं।

एक बार मेरी पत्नी को ब्रेन-हेमरेज हो गया था। डॉक्टर बोला : ''तीन लाख रुपये खर्च होंगे।'' मैंने 'ऋषि प्रसाद' में एक मंत्र पढ़ा था, उसका पत्नी से जप करवाया, जिससे दवा ने असर करना शुरू कर दिया। डॉक्टर देखकर हैरान रह गये ! तीन दिन में ही वह खुद चलने लगी।

एक बार उसके घुटने में दर्द हुआ। डॉक्टरों को दिखाया तो बोले : ''घुटना घिस गया है, ऑपरेशन होगा जिसमें चार लाख रुपये लगेंगे।'' बापूजी ऑपरेशन करवाने की मना करते हैं, अतः मैंने नहीं करवाया और आयुर्वेदिक अस्पताल में ले गया। रात को वह आरोग्य-मंत्र का जप करते-करते सो गयी। बापूजी सुबह ४ बजे उसके सपने में आकर बोले : ''तेरा घुटना बिल्कुल ठीक हो गया है। अब तू चिंता मत कर। ऑपरेशन की कोई जरूरत नहीं है।'' अगले ही दिन वह अच्छी तरह से चलने लगी। ऋषि प्रसाद की सेवा से मिली पूज्यश्री की कृपा से मेरे ७ लाख रुपये बच गये।

मैं इसमें प्रकाशित खान-पान संबंधी बातों का फायदा उठाता हूँ। आज ६३ साल की उम्र में जवानों से ज्यादा काम कर सकता हूँ। मेरे अच्छे स्वास्थ्य का राज है ऋषि प्रसाद।

ऋषि प्रसाद तो बापूजी का अनमोल प्रसाद है। समय-समय पर इसमें कई उपयोगी मंत्र छपते हैं, जिनसे लोगों को बहुत लाभ होता है। बापूजी ऐसा ज्ञान बाँट रहे हैं जो पूरी दुनिया के अंदर कहीं नहीं मिल सकता। बापूजी वेदों-पुराणों का अनमोल ज्ञान सबको दे ही रहे हैं, ले तो कुछ नहीं रहे। ऐसे परम मंगलकारी समाजसेवी संत के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !

– राजेन्द्र कुमार खन्ना, दिल्ली

सचल दूरभाष : ०८७४५८४८८२९

सचल दूरभाष : ०९६८९२१४७०१

(पृष्ठ ३२ से 'गुरुआज्ञा...' का शेष) इसका तात्पर्य है कि 'कृपा करके मुझे अपने भूतकाल के कर्मों एवं आसक्तियों से मुक्त कर दीजिये। मेरे समस्त संस्कारों को ज्ञानाग्नि में दग्ध कर दीजिये।'

मैं इन लकड़ी के टुकड़ों को अग्नि में भस्म कर दूँगा ताकि तुम्हारे विगत कर्म भविष्य को प्रभावित न कर सकें। आज मैं तुम्हें एक नया जीवन दे रहा हूँ। तुम्हारा जीवन भूतकाल से प्रभावित न रहेगा। तुम अब नवीन आध्यात्मिक जीवन का निर्माण करो।''

वास्तव में सद्गुरु अपने लिए कुछ भी नहीं चाहते, वे केवल यह चाहते हैं कि जो आत्म-खजाना उन्हें मिला है, वही दूसरों को भी मिल जाय।

(पृष्ठ ३१ से 'सत्त्वगुण का विकास जीवन ...' का शेष) ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर।
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर।
(सुखमनी साहिब)

नजरों से वे निहाल हो जाते हैं, जो ब्रह्मज्ञानी की नजरों में आ जाते हैं।

वह पुरुष मनुष्यरूप में साक्षात् नारायण का रूप हो जाता है - ऐसा वसिष्ठजी महाराज कहते हैं।

ऐसे महात्मा भले अभी हमारे सामने नहीं हों तो भी उनके नाम की मनौती मानते हैं तो कुदरत मदद करती है। श्रीरामजी हमारे सामने नहीं हैं, लीलाशाहजी बापू हमारे सामने नहीं हैं लेकिन उनका चिंतन, सुमिरन, उनकी मनौती हमको मदद करती है। तो आप तामसी हैं तो राजसी बनो, राजसी हैं तो सात्त्विक बनो और सात्त्विक हैं तो आत्मसाक्षात्कार करो, गुणातीत हो जाओ।

पूज्य बापूजी के जीवन, उपदेश और योगलीलाओं का घर बैठे आनंद पाने हेतु देखें

ऋषि दर्शन

आध्यात्मिक मासिक विडियो मैगजीन

खुशखबर : अब आप 'ऋषि दर्शन' का कोई भी अंक इंटरनेट द्वारा बिना किसी डाक खर्च के सिर्फ ५० रुपये में प्राप्त कर सकते हैं। वेबसाइट www.rishidarshan.org से डाउनलोड भी कर

सकते हैं।

इसमें आप पायेंगे :

* पूज्यश्री के सारभूत दुर्लभ सत्संग।
* संकीर्तन, ध्यान तथा ज्ञानप्रद एवं आनंद से भर देनेवाली बापूजी की लीलाएँ।
* जीवन को उन्नत करने के उपाय।
* पर्व-त्यौहारों व संत-महापुरुषों की जयंतियों की महिमा एवं मनाने की विधि।
* पुण्यदायी तिथियाँ।
* शारीरिक स्वास्थ्य व मानसिक प्रसन्नता प्राप्ति के उपाय।
* युवाओं एवं महिलाओं के जीवन-उत्थान व समस्याओं से संबंधित मार्गदर्शन।

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में **वार्षिक :** ४५० रु., **पंचवार्षिक :** १९०० रु.

सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७७७/८८, **ई-मेल :** contact@rishidarshan.org

रसप्रद, आनंददायक पाठ

प्रतिदिन भोजन से पहले 'श्री आशारामायणजी' की कहीं से भी शुरुआत करके कुछ पंक्तियाँ बोली जायें और बीच-बीच में कभी 'नमः पार्वतीपतये हर हर महादेव, कृष्ण-कन्हैया लाल की जय, रणछोड़राय की जय !' का उद्घोष करें तो कभी 'ॐ आनंद... ॐ माधुर्य... ॐ शांति... ॐ हरि... ॐ गुरु...' आदि बोलकर हास्य-प्रयोग करें तो कभी 'जोगी रे...' भजन की कुछ पंक्तियाँ गायें। ऐसा करने से तुम्हें बहुत आनंद आयेगा। यह रसप्रद प्रयोग देशव्यापी, विश्वव्यापी हो जायेगा।

श्री आशारामायणजी की पुस्तिका खरीदने पर उपहारस्वरूप पायें :

(१) ५ पुस्तिका पर १ निःशुल्क (२) १५ पुस्तिका पर ५ निःशुल्क
(३) ५० पुस्तिका पर २० निःशुल्क (४) १०० पुस्तिका पर ५० निःशुल्क

श्री आशारामायण
योगलीला
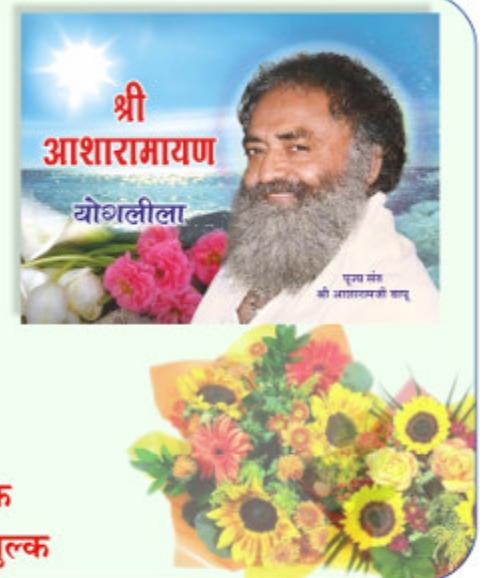
वर्षा ऋतु में रोग, मंदाग्नि, वायुप्रकोप, पित्तप्रकोप का बाहुल्य होता है। ८० प्रकार के वायुसंबंधी व ३२ प्रकार के पित्तसंबंधी रोग होते हैं। वात और पित्त जुड़ता है तो हृदयाघात (हार्ट-अटैक) होता है और दूसरी कई बीमारियाँ बनती हैं। इनका नियंत्रण करने के लिए बहुत सारी दवाइयों की जरूरत नहीं है। समान मात्रा में हरड़ व आँवला, थोड़ी-सी सोंठ एवं मिश्री का मिश्रण बनाकर घर में रख लो। आश्रम के आँवला चूर्ण में मिश्री तो है ही। आँवला, मिश्री दोनों पित्तशामक हैं। सोंठ वायुशामक है और हरड़ पाचन बढ़ानेवाली है। अगर वायु और पित्त है तो यह मिश्रण लो और अकेला वायुप्रकोप है तो हरड़ में थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर लो अथवा हरड़ घी में भूनकर लो।

जो वर्षा ऋतु में रात को देर से सोयेंगे उनको पित्तदोष पकड़ेगा। इन दिनों में रात्रि को जल्दी सोना चाहिए, भोजन सुपाच्य लेना चाहिए और बादाम, काजू, पिस्ता, रसगुल्ले, मावा, रबड़ी दुश्मन को भी नहीं खिलाना, बीमारी लायेंगे।

पाचन कमजोर है, पेट में खराबियाँ हैं तो ३० ग्राम तुलसी-बीज जरा कूट दो, फिर उसमें १०-१० ग्राम शहद व अदरक का रस मिला दो। आधा-आधा ग्राम की गोलियाँ बना लो। ये दो गोली सुबह ले लो तो कैसा भी कमजोर व्यक्ति हो, भूख नहीं लगती हो, पेट में कृमि की शिकायत हो, अम्लपित्त (एसिडिटी) हो, सब गायब ! रविवार को मत लेना बस। बुढ़ापे को रोकने में और स्वास्थ्य की रक्षा करने में तुलसी के बीज की बराबरी की दूसरी चीज हमने नहीं देखी।

जिसको पेशाब रुकने की तकलीफ है वह जौ के आटे की रोटी अथवा मूली खाये, अपने-आप तकलीफ दूर हो जायेगी। स्वस्थ रहने के लिए सूर्य की कोमल किरणों में स्नान सभी ऋतुओं में हितकारी है। अश्विनी मुद्रा वर्षा ऋतु की बीमारियों को भगाने के लिए एक सुंदर युक्ति है। (विधि : सुबह खाली पेट शवासन में लेट जायें। पूरा श्वास बाहर फेंक दें और ३०-४० बार गुदाद्वार का आकुंचन-प्रसरण करें, जैसे घोड़ा लीद छोड़ते समय करता है। इस प्रक्रिया को ४-५ बार दुहरायें।)

बड़ी उम्र में, बुढ़ापे में आम स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं लेकिन जो कलमी आम हैं वे देर से पचते हैं और थोड़ा वायु करते हैं। लेकिन गुठली से जो पेड़ पैदा होता है उसके आम (रेशेवाले) वायु-नाश करते हैं, जल्दी पचते हैं और बड़ी उम्रवालों के लिए अमृत का काम करते हैं। कलमी आम की अपेक्षा गुठली से पैदा हुए पेड़ के आम मिलें तो दुगने भाव में लेना भी अच्छा है।

घुटने के दर्द का इलाज

* १०० ग्राम तिल को मिक्सी में पीस लो और उसमें १० ग्राम सोंठ डालो। ५-७ ग्राम रोज फाँको।
* अरंडी के तेल में लहसुन (३-४ कलियाँ) टुकड़ा करके डाल के गर्म करो। लहसुन तल जाय तो उतारकर छान के रखो। घुटनों के दर्द में इस तेल से मालिश करो।

विविध रोगनाशक रसायन

पुनर्नवा

पुनर्नवा श्रेष्ठ गुणकारी, बलप्रद (टॉनिक), धातु-पोषक एवं रोगनाशक औषधि है। यह हिन्दी में लाल पुनर्नवा, सांठ, गुजराती में साटोड़ी, मराठी में घेटुली तथा अंग्रेजी में केसुशशव और Horse-purslane नाम से जानी जाती है।

पुनर्नवा यकृत (लीवर) का कार्य सुधारकर रक्त की वृद्धि व शुद्धि करती है। शरीर की सूजन उतारती है, भूख बढ़ाती है। यह आँखों के लिए भी बहुत हितकारी है। गुर्दे (किडनी) की खराबी तथा मूत्रगत तकलीफों में पुनर्नवा विशेष असरकारक है।

मूँग या चने की दाल मिलाकर इसकी बढ़िया सब्जी बनती है, जो शरीर की सूजन, मूत्ररोगों (विशेषकर मूत्राल्पता), हृदयरोगों, मंदाग्नि, उलटी, पीलिया, रक्ताल्पता, यकृत व प्लीहा के विकारों आदि में फायदेमंद है।

पुनर्नवा का रसायन-कार्य : पुनर्नवा शरीर में संचित मलों को मल-मूत्र आदि द्वारा बाहर निकाल के शरीर के पोषण का मार्ग खुला कर देती है।

रसायन-प्रयोग : (१) पुनर्नवा के ताजे पत्तों के १५-२० मि.ली. रस में एक चुटकी काली मिर्च व थोड़ा-सा शहद मिलाकर लें।

(२) ताजी पुनर्नवा की २० ग्राम जड़ पीस के दूध के साथ एक वर्ष तक लेने से जीर्ण शरीर भी नया हो जाता है। ताजी पुनर्नवा उपलब्ध न होने पर ५ ग्राम पुनर्नवा चूर्ण का उपयोग कर सकते हैं।

विविध रोगनाशक प्रयोग : पुनर्नवा के पंचांग या मूल का ३ ग्राम चूर्ण शहद या गुनगुने पानी से सुबह-शाम लें। यह सूजन, मूत्राल्पता, हृदय-विकार आदि विविध रोगों में अत्यंत लाभकारी है।

पुनर्नवा ताजी न मिले तो पुनर्नवा गोलियाँ व अर्क सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों व समितियों के सेवाकेन्द्रों में उपलब्ध हैं।

(चित्र पृष्ठ ४३ पर)

(चित्र पृष्ठ ४३ पर)

संधिशूलहर (जोड़ों के दर्द की दवा)

इससे जोड़ों व कमर का दर्द ठीक होता है। हड्डियाँ व नसें मजबूत बनती हैं। यह गठिया, मधुमेह, सायटिका व मोटापे में भी लाभदायी है।

(चित्र पृष्ठ ४३ पर)

निर्मलम् (Hand Wash)

इसका प्रतिदिन इस्तेमाल आपके हाथों की कीटाणुओं से सुरक्षा करता है और उन्हें स्वस्थ, स्वच्छ व तरोताजा रखने में मदद करता है।

आश्रम के उत्पाद एवं सत्साहित्य आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क : ०९२१८११२२३३

ई-मेल : hariomcare@gmail.com

रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३०

ई-मेल : satsahityamandir@gmail.com

(चित्र पृष्ठ ४३ पर)

श्री गुरुग्रंथ साहिब में गुरु का स्वरूप

गुरदेव माता गुरदेव पिता
गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥...
...गुरदेव सतिगुरु पारब्रह्मु परमेसरु
गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥

'गुरु ही माँ हैं, गुरु ही पिता हैं, गुरु मालिक प्रभु का रूप हैं। गुरु (माया के मोह का) अँधेरा नष्ट करनेवाले मित्र हैं, गुरु ही संबंधी और भाई हैं। गुरु (असली) दाता हैं जो प्रभु को बतलाते हैं। गुरु का उपदेश ऐसा है जिसका असर (कोई विकार आदि) गँवा नहीं सकता। गुरु शांति, सत्य और बुद्धि के स्वरूप हैं। गुरु एक ऐसे पारस हैं जिनका स्पर्श पारस के स्पर्श से भी श्रेष्ठ है। गुरु (सच्चे) तीर्थ हैं, अमृत-सरोवर हैं, गुरु के ज्ञान (रूपी जल) का स्नान (तमाम तीर्थ-स्थानों के स्नान से भी) श्रेष्ठ है। गुरु करतार के रूप हैं, समस्त पापों को दूर करनेवाले हैं, गुरु विकृत व्यक्तियों को पवित्र करनेवाले हैं।

जब से जगत बना है, गुरु शुरू से ही हरेक युग में हैं। गुरु का दिया हुआ भगवन्नामयुक्त मंत्र जपकर पार हुआ जाता है।

हे प्रभो ! कृपा कर, हमें गुरु की संगति दे ताकि हम मूर्ख, पापी उनकी संगति में (रहकर) पार हो जायें। गुरु परमेश्वर पारब्रह्म के रूप हैं। हे नानक ! हरि के रूप गुरु को (सदा) नमस्कार करना चाहिए।'

(श्री गुरुग्रंथ साहिब, पृष्ठ २५०, गउड़ी बावन, अखरी महला ५)

गुरुदेव के पथ का अनुगमन करते हुए कर्मयोगी शिष्य

अक्षय तृतीया पर निष्काम सेवाएँ

शुभ कर्मों का अनंत फल देनेवाली तिथि 'अक्षय तृतीया' को निमित्त बनाकर विविध सेवाकार्य किये गये । हाथरस (उ.प्र.) में बेल-शरबत का वितरण, गरीबों में अन्न-वस्त्र वितरण व आर्थिक सहायता, अस्पतालों के मरीजों में फल व औषधि वितरण तथा जरूरतमंद बच्चों में सत्साहित्य व नोटबुक वितरण किया गया । नासिक, रजोकरी-दिल्ली, रायपुर, भिलाई (छ.ग.) सहित अनेक स्थानों पर शरबत-वितरण किया गया व कई स्थानों पर दाल-पुलाव, सत्तू, चना, फल आदि प्रसाद बाँटा गया।

जीवनोपयोगी सामग्री-वितरण व भंडारे

राजनांदगाँव, कोटा-रायपुर (छ.ग.), हाथरस (उ.प्र.), मोखड़ा जि. झाबुआ, पंचेड़ (म.प्र.), रजोकरी-दिल्ली, काठमांडू (नेपाल) आदि स्थानों पर गरीबों में भंडारा एवं अनाज, कपड़े, बर्तन, चप्पल आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण किया गया। साथ ही बच्चों में सत्साहित्य, नोटबुक आदि का वितरण हुआ। 'भजन करो, भोजन करो, पैसा पाओ' योजना के तहत पलाश आदि शरबतों की बोतलों का वितरण किया गया । (तस्वीरों हेतु देखें 'ऋषि प्रसाद', जून २०१६, आवरण पृष्ठ २)

विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों का आयोजन

छुट्टियों में विद्यार्थियों की दीनता-हीनता व दुर्बलता की छुट्टी करने तथा उनके जीवन को आदर्श सुसंस्कारों से सम्पन्न बनाने हेतु 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' का आयोजन देशभर में किया गया। (तस्वीरों हेतु देखें 'लोक कल्याण सेतु', जून २०१६, आवरण पृष्ठ २)

बड़ौदा, लिमखेड़ा जि. दाहोद, डीसा, सूरत (गुज.), अम्बिकापुर, रायपुर, बिलासपुर (छ.ग.), सांताक्रूज-मुंबई, आलंदी-पुणे, दोंडाईचा, चन्द्रपुर, सातारा (महा.), लड्डूगाँव,

सम्बलपुर (ओड़िशा), बड़ौत जि. बागपत, कादीपुर जि. सुल्तानपुर, गाजियाबाद, गोरखपुर (उ.प्र.), सुमेरपुर, जोधपुर, जयपुर (राज.), बड़गाँव जि. खरगोन, सागर (म.प्र.), पटियाला (पंजाब) आदि स्थानों पर आयोजित हुए शिविरों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

अन्य सेवाकार्य

महाराष्ट्र में जि. नासिक के सारोले खुर्द व सायखेड़ा एवं जि. अमरावती के उत्तमसरा आदि ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर निःशुल्क होमियोपैथिक चिकित्सा शिविर लगाये गये। अहमदाबाद में महिला उत्थान मंडल द्वारा आयोजित ७ दिवसीय 'जप-अनुष्ठान शिविर' में देशभर से आयी महिलाओं ने भाग लिया। उज्जैन कुम्भ, बेलौदी जि. दुर्ग (छ.ग.), फरीदाबाद (हरि.) में ऋषि प्रसाद सम्मेलन तथा रायता (महा.) में तीन दिवसीय और रायपुर (छ.ग.) में दो दिवसीय तेजस्वी युवा शिविर सम्पन्न हुए। करोलबाग (दिल्ली) में 'योग-सेवा-साधना शिविर' व साधक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। औरंगाबाद आश्रम में पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई हेतु ७ दिवसीय अनुष्ठान शिविर का आयोजन हुआ।

प्रभातफेरियों एवं संकीर्तन यात्राओं द्वारा सांस्कृतिक जागरण का कार्य देशभर में नियमितरूप से जारी है। गाजियाबाद में १०१६ दिन तथा भुवनेश्वर (ओड़िशा) में ७९८ दिन से लगातार हरिनाम प्रभातफेरियाँ निकाली जा रही हैं।

संतों के अनुभव की अमृतधारा

- श्री निर्मलजी महाराज (वेदांत निकेतनवाले)

गुरु-महिमा

गुरु-दर्शन से विक्षेप का नाश होता है, गुरु-सेवा से अंतःकरण का मलदोष उतरता है, गुरु-उपदेश से अंतःकरण के आवरण-दोष की काई नष्ट होती है और गुरुकृपा से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गुरु की मूर्ति मन में ध्यान ।।
गुरु के शब्द मंत्र मन मान ।।
गुरु के चरण हृदय लै धारो ।।
गुरु पार ब्रह्म सदा नमस्कारो ।।
मत कोई भरम भुल्ले संसार ।।
गुरु बिन कोई न उतरत पार ।।

ब्रह्मज्ञानी की महिमा

मनुष्य पाप-निवृत्ति के लिए गंगास्नान तथा कई तीर्थयात्राएँ करता है, कई मंदिरों तथा मस्जिदों में सिजदे करता है लेकिन ब्रह्मज्ञानी महापुरुष जिस जल में स्नान कर लें वही जल गंगाजल है, जहाँ निवास करें वही स्थान तीर्थस्थान है और यदि वे तीर्थ पर चले जायें तो वह सुतीर्थ हो जाता है।

अहंग्रह उपासना

अहंग्रह उपासना से साधक को सीधा भगवत्प्राप्ति का मार्ग मिलता है। ('मैं ब्रह्म हूँ' - ऐसा चिंतन करना अहंग्रह उपासना है।) यह वही राग है जो गुरुकृपा से प्राप्त होता है और इससे हृदय में ज्ञानदीप जलता है।

हम वासी उस देश के, जहाँ पारब्रह्म का खेल।
दीया जले अगम का, बिन बाती बिन तेल ।।

क्रोध को स्वयं पर हावी क्यों होने देते हो ?

एक शिष्य ने अपने गुरु से कहा : ''मैं बहुत जल्दी क्रोधित हो जाता हूँ। कृपया मुझे इससे छुटकारा दिलायें।''

गुरु ने कहा : ''यह तो बहुत विचित्र बात है ! मुझे क्रोधित होकर दिखाओ।''

''अभी तो मैं नहीं हो सकता।''

''क्यों ?''

''यह अचानक होता है।''

''ऐसा है तो यह तुम्हारी प्रकृति नहीं है। यदि यह तुम्हारे स्वभाव का अंग होता तो तुम मुझे यह किसी भी समय दिखा सकते थे। तुम किसी ऐसी चीज को स्वयं पर हावी क्यों होने देते हो जो तुम्हारी है ही नहीं ?''

इस वार्तालाप के बाद शिष्य को जब कभी क्रोध आने लगता तो वह गुरु के शब्द याद करता। इस प्रकार उसने शांत और संयमित व्यवहार को अपना लिया।

क्रोध दूर करने का एक सरल प्रयोग भी है, जो पूज्य बापूजी सत्संग में बताते हैं : ''क्रोध आये तो मुट्ठियाँ बंद कर लो। दोनों हाथों की मुट्ठियाँ ऐसे बंद करें कि नखों के दबाव से हथेलियाँ दबें। इससे क्रोध दूर होने में मदद मिलेगी।''

हे सद्गुरु भगवान !

स्वामिन् श्री सद्गुरु भगवान ॥
तुम शरणागत के प्रतिपालक,
अनुपम दया निधान ॥
तुम समर्थ सर्वज्ञ सरल चित,
प्रेम निधे अविकारी हो।
तुम अज्ञान तिमिर के नाशक,
दीन बंधु दुखहारी हो।
तुम सन्मति सद्गति के दाता,
ज्ञाता गुणी महान ॥ स्वामिन्...
अधमोद्धारक तारक तुम्हीं,
सर्व सिद्धि के तुम दानी।
अपने अपने इच्छित सुख का,
तुम से पथ पाते प्रानी।
करुणा वत्सल दया दृष्टि से,
करते तुम कल्यान ॥ स्वामिन्...
इस भूतल में प्रेम भाव वश,
मानव तन धर आते हो।
पद्म-पत्र सम निर्मल रहकर,
लीला विविध दिखाते हो।
तुम सच्चिदानंदघन हे प्रभु,
'पथिक' हृदय धन प्रान ॥
स्वामिन्...

– संत पथिकजी

✻ मरणासन्न व्यक्ति के सिरहाने गीताजी रखें। दाह-संस्कार के समय उस ग्रंथ को गंगाजी में बहा दें, जलायें नहीं। मृतक के अग्नि-संस्कार की शुरुआत तुलसी की लकड़ियों से करें अथवा उसके शरीर पर थोड़ी-सी तुलसी की लकड़ियाँ बिछा दें, इससे दुर्गति से रक्षा होती है।

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२७ जुलाई : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से दोपहर ३-३३ तक)

३० जुलाई : कामिका एकादशी (व्रत व रात्रि-जागरण करनेवाला मनुष्य न तो कभी भयंकर यमराज का दर्शन करता है और न कभी दुर्गति में ही पड़ता है। व्रत से सम्पूर्ण पृथ्वी के दान के समान फल मिलता है। यह एकादशी सब पातकों को हरनेवाली है तथा इसके स्मरणमात्र से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।)

१० अगस्त : बुधवारी अष्टमी (सुबह १०-३९ से ११ अगस्त सूर्योदय तक)

१४ अगस्त : पुत्रदा एकादशी (व्रत से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। इसका माहात्म्य सुनने से मनुष्य पाप से मुक्त हो जाता है तथा इहलोक में सुख पाकर परलोक में स्वर्ग की गति को प्राप्त होता है।)

१६ अगस्त : विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर १२-१५ से शाम ६-४१ तक) (इस दिन किये गये जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल लाख गुना होता है। - पद्म पुराण)

१८ अगस्त : नारियली पूर्णिमा, रक्षाबंधन (श्रावणी पूर्णिमा पर्व पर धारण किया हुआ रक्षासूत्र सम्पूर्ण रोगों तथा अशुभ कार्यों का विनाशक है। इसे वर्ष में एक बार धारण करने से मनुष्य वर्षभर रक्षित हो जाता है। - भविष्य पुराण)

बच्चे-बच्चियों को नींद से उठाने की मधुमय युक्ति

बच्चों को यंत्र के बल से मत जगाओ। अलार्म की ध्वनि अथवा 'ऐ उठो, उठो, ६ बज गये, ५ बज गये, ७ बज गये...' खटखट करके उठाने से ये बच्चे आपके लिए दुःखदायी हो जायेंगे। सुबह बच्चों को उठाओ तो कैसे उठाओ ? पहले आप शांत हो जाओ, आप प्रकाश में आ जाओ, अमृतमय ईश्वर में आ जाओ। बच्चों की गहराई में जो परमेश्वर है वह मोहन है, गोविंद है, गोपाल है, राधारमण है। 'राधा', उलटा दो तो 'धारा', वृत्ति की धारा उलटा दो। धारा के द्वारा वह चैतन्य ही तो उल्लसित हो रहा है। बच्चों में भी गहराई में परमात्मा की भावना करो, फिर बोलो :

जागो मोहन प्यारे, जागो नंददुलारे।
जागो गोविंद प्यारे, जागो हरि के दुलारे ॥
जागो लाला प्यारे, लाली दुलारी...

बच्चे-बच्चियाँ उस परमात्मा की स्मृति से मधुमय हो जायेंगे तो तुम्हारे लिए भी सुखद होंगे और समाज के लिए भी।

सामूहिक रूप से लोगों को जगाना हो तो कहें :

जागो लोगो ! मत सुओ, न करो नींद से प्यार।
जैसा सपना रैन का, वैसा ये संसार ॥
श्रीराम जय राम जय जय राम।
गोविंद हरे गोपाल हरे, जय जय प्रभु दीनदयाल हरे।
सुखधाम हरे आत्माराम हरे, जय जय प्रभु दीनदयाल हरे ॥

अलख की ओर

इसमें आप पायेंगे :

* सुख-दुःख का सदुपयोग करने की कला।
* हर हाल में खुश रहने की युक्तियाँ।
* अद्‌भुत सामर्थ्य की चाबी 'एकाग्रता' को पाने का उपाय।
* जानिये कौन है सगुण उपासक और निर्गुण उपासक में श्रेष्ठ।

तथा और भी बहुत कुछ...

सच्चा सुख

* सच्चा सुख क्या है ?
* सूरदासजी का जीवन कैसे परिवर्तित हुआ ?
* क्या है विवेक का दर्पण ?
* क्या है सफलता की जड़ ? आदि।
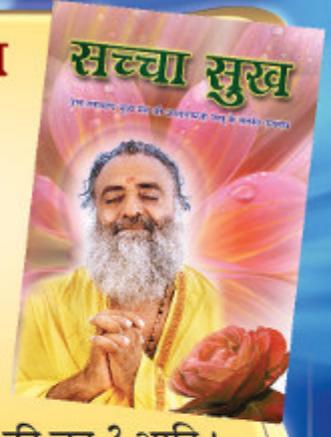
उपरोक्त सत्साहित्य स्वयं पढ़ें एवं भेंट में या शुल्क लेकर दे के औरों को भी लाभान्वित करें।

पुनर्नवा मूल (टेबलेट)

₹ २५

पुनर्नवा अर्क

२१० मि.ली. ₹ २०

पढ़ें पृष्ठ ३७

निर्मलम् (Hand Wash)

२०० मि.ली. ₹ ३८

पढ़ें पृष्ठ ३८

संधिशूलहर

जोड़ों के दर्द की दवा

१५० ग्राम ₹ ६०

सत्र २०१५-१६ की बोर्ड परीक्षाओं में भी गुरुकुलों के उत्कृष्ट परिणाम

आवरण पृष्ठ २ से आगे

१०वीं सीबीएसई बोर्ड परीक्षा-परिणाम (CGPA १०.० में से)

अभिषेक चौधरी आगरा, ९.८

नारायण अंजना इंदौर, ९.६

प्रणव अग्रवाल इंदौर, ९.६

अरुण कुमार आगरा, ९.६

हिमांशु दीक्षित आगरा, ९.६

कपिल चौधरी आगरा, ९.६

प्रशांत चौधरी आगरा, ९.६

विशाल चौधरी आगरा, ९.६

गार्गी राठौर छिंदवाड़ा, ९.६

गौरव सदाफले छिंदवाड़ा, ९.६

ब्रिजेश सिसोदिया आगरा, ९.४

प्रिया आगरा, ९.४

पुष्पेन्द्र सिंह आगरा, ९.४

तुषार कुमार आगरा, ९.४

विपुल अग्रवाल आगरा, ९.४

कृष्णम गडेवाल छिंदवाड़ा, ९.४

प्रज्ञा गुप्ता छिंदवाड़ा, ९.४

मनीषा कुमारी छिंदवाड़ा, ९.४

प्रशांत सिंह इंदौर, ९.४

दिवेश कुमार इंदौर, ९.४

१०वीं राज्य बोर्ड परीक्षा-परिणाम

सुशील गंगने धुलिया ८६%

हरमनप्रीत कौर लुधियाना ८५%

अनुपमा गुप्ता रायपुर ८४.६%

१२वीं बोर्ड परीक्षा-परिणाम

ब्रिजेश मौर्य अहमदाबाद ९५.८२ PR

अविनाश तिवारी अहमदाबाद ९३.५७ PR

विरल केवडिया अहमदाबाद ८६.६८ PR

सूरज छिंदवाड़ा ८५%

देशभर में हो रहे 'ऋषि प्रसाद सम्मेलनों' के कुछ दृश्य

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
Posting at Dehradun G.P.O.
between 4th to 20th of every month.
Date of Publication: 1st July 2016

महिला उत्थान मंडल द्वारा अहमदाबाद में सुसम्पन्न हुआ '७ दिवसीय जप-अनुष्ठान शिविर'

विद्यार्थी शिविरों में ओजस्वी-तेजस्वी जीवन की कुंजियाँ पाते देश के भावी कर्णधार

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।